Niamat Singh Jain Tract Series No 12

श्रीजिनेन्द्रायनमः

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथमाला अंक १२

...ुन्दरी नाटक

जिसमें चेतन व कर्म और कुमति व ...
वर्णन अच्छी रीति से दिखाया गया है ॥

जिसको

न्यामत सिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट
बोर्ड हिसार ने सर्व साधारण के
हितार्थ ...
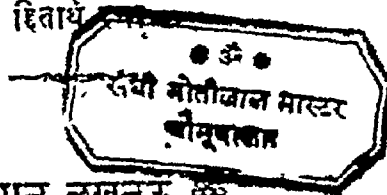
❀ स्थान लखनऊ ❀

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस में छपी

श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४४६

चौथीवार १००० कापी (सन १९२० ई०) मूल्य ।।।)

नोटिस

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथमाला के निम्नलिखित भाग तय्यार होचुके हैं परंतु अभीतक वहही भाग छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है ॥

		नागरी
१	जिनेन्द्र भजनमाला	I-)
२	जैन भजन रत्नावली	I)
३	जैन भजन पुष्पावली	
४	पंच कल्याणक नाटक	
५	न्यामत नीति	
६	भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	
७	जैन भजन मुक्तावली	=)
८	राजल भजन एकादशी	-)
९	स्त्रीगान जैन भजन पचीसी	=)
१०	कलयुगलीला भजनावली	-)II
११	कुन्ती नाटक	=)
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	III)
१३	अनाथ रुदन	-)
१४	जैन कालेज भजनावली	
१५	रामचरित्र भजन मंजरी	
१६	राजल वैरागमाला	
१७	ईश्वर सरूप दर्पण	
१८	जैन भजन शतक	I)
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक (विलायती कागज बड़ा साइज मोटेअक्षर	२II)

पुस्तक मिलने का पताः--

B NIAMAT SINGH JAINI

Secretary District Board,

HISSAR Distt. (Punjab)

नियम

(१) चिट्ठी में पता साफ नागरी वा उर्दू वा अंग्रेजी में लिखना चाहिये ॥

(२) यदि किसी चिट्ठी का जवाब न पहुंचे तो दूसरी चिट्ठी साफ पते की आनी चाहिये ॥

(३) ५) रुपये से कम पर कोई कमीशन नहीं दिया जावेगा ५) रु० पर या ५) रु० से ज्यादे पर २०) रु० सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ॥

(४) कोई साहब वी० पी० वापिस न करें वरने डाक महसूल उनको देना होगा ॥

(५) यदि कोई साहब २०) से जियादा पुस्तकें मंगवाएं तो चौथाई मूल्य पेशगी भेजना चाहिये ॥

पुस्तक मिलने का पताः—

बाबू न्यामतसिंह जैनी सैक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार
मु० हिसार जिला खास (पंजाब)

B NIAMAT SINGH JAINI
Secretary District Board,
HISSAR Distt (Punjab)

न्यामत विलास अंक १२
चिदानन्दशिवसुन्दरी नाटक
पहला ऐक्ट
राजा चेतन को कुमतिवश मोहनींद में देखकर
शुभप्रकृति देवी का आना और शुभप्रकृति
देवी व सुमता व जिनवाणी की मदद
से राजा चेतन का मोहनींद से
उठना और कुमता को अपने
दरबार से निकाल देना

श्री जिनेन्द्रायनमः ॥

(१)

चाल नाटक–ग़जल ॥ अजब नहीं अकसीर हमारी खाक को चाहे जरकरदे ॥

रंगाचार भजन करता हुआ रंगभूमिमें आता है ॥

करो ध्यान उस ईश्वर का जो कुमति हटा सुमति वरदे ।
हितकारी उपदेशकरे और मोह तिमर छिनमें हरदे ॥ टेक ॥
भवसागरसे तिरनेको जो स्याद्वाद तीरथ करदे ।
आप तिरे औरोंको तारे सबपर दया नज़र करदे ॥ १ ॥
ज्ञाता दृष्टा है सबका वह राग द्वेष न्यारे करदे ।
न्यामत ऐसे श्रीजिनके चरणों में अपना सिर धरदे ॥ २ ॥

(२)

चाल-अफ़ीमसेरे सदकेने पागल बना दिया ॥

नटीका आना और रंगाचार से बात चीत करना ॥

नटी—कहो आज रंगाचार यह विचार कहा है ।
आखिर इस रंग भूमिका सरोकार कहा है १ ॥
रङ्गा०—बैठी है सभा सुननेको उपदेश तुम्हारा ।
आवो नटी प्यारी कहो बिचार कहा है ॥ २ ॥
नटी—उपदेश भजन शास्त्र नाटक के द्वारा ।
होता है कहो आपका बिचार कहा है । ३ ॥
रङ्गा०—सुनते हैं भजन शास्त्र हररोज़ पियारी ।
नाटक कोई दिखलावो इसतफ़ मार कहा है । ४ ।

नटी—नाटक है समय सार दयासुंदरी नाटक ।
नाटक हैं लाखों आपका बिचार कहा है । ५ ।
रङ्गा०—नाटक करो ऐसा करे कल्याण हमारा ।
तू चातुर है इसमें हमारा बिचार कहा है । ६ ।
नटी—अच्छा तो चिदानन्द शिवा सुंदरी नाटक ।
दिखलावें अब इस बातकी तकरार कहा है ॥ ७ ॥
रङ्गा—वाह वाह पियारी आपने तो मनकी सुनाई ।
चलिये जलदी अब इसमें इन्तज़ार कहा है ।

(३)

चाल नाटक—पहलूम यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥
सब ऐक्टरों का मिलकर गाना ॥

—o—

सारी सभाको जयजिनेन्द्र जयजिनेन्द्र हो ।
तिहुं लोक तिहूं काल में जय जयजिनेन्द्र हो ॥ १ ॥
शिवनार चिदानंदका नाटक करेंगे हम ।
बोलो पुकार बार बार जय जिनेन्द्र हो ॥ २ ॥
चेतनको है शिवसुन्दरी जिस तौरसे मिली ।
बतलायेंगे अय साहिबान जय जिनेन्द्र हो ३ ।
कर्मोंका नाश किस तरह चेतन ने किया है ।
दिखलाएंगे हम वह भी तुम्हें जयजिनेन्द्र हो । ४ ।
शिवसुन्दरी चाहो तो कहो जयजिनेन्द्र हो
हां जयजिनेन्द्र जयजिनेन्द्र जयजिनेन्द्र हो ५ ॥

न्यामत श्रीजिनेन्द्र चरण चितलगाइये
मंगल हों विघ्न नाश हों जय जयजिनेन्द्र हो ६ ॥

(४)

चालनाटक–दिये दुःख यह फलकने मारे ॥ चले छोड़ के राज विचारे ॥
शुभ प्रकृति देवीका आना और चेतन को मोह
नींदमें देखकर अफ़सोस करना ॥

किये छल यह कुमतिने भारे । पड़ेनींदमें चेतन प्यारे । टेक ॥
हैं कर्म महा अन्याई । यह पापी महा दुखदाई जी ।
हरे चेतन आन विचारे । पड़े नींद में चेतन प्यारे १ ॥
है मोह महा बलधारी ॥ की वशमें परजासारी जी ।
इस मोहसे सुर नर हारे । पड़े नींदमें चेतन प्यारे ॥ २ ॥
यह चेतन सत अविनाशी । चित मूरत ज्ञान प्रकाशी जी ।
किये कैसे कुमति मतवारे । पड़े नींद में चेतन प्यारे । ३ ॥
गया राज पाट सब मारा । सुख सम्पति सबही हाराजी ।
फिरें मंत्री दर दर मारे । पड़े नींदमें चेतन प्यारे ४ ॥
अब नींदसे याही जगाऊं । आपा पर भेद कराऊं जी ॥
हुवे अशुभ करम सब न्यारे । पड़े नींद में चेतन प्यारे ५॥

(५)

चाल—मामूर हूं शोपीमे शराब्न से भरी हूं ॥
शुभ प्रकृति देवीका चेतन को जगाना ॥

वे होश मोह नींदमें गफ़लत में पड़े हो ।
आंखें तो खोलो नींदसे देखो तो खड़े हो ॥ १ ॥

कहां राज पाट आपका दरबार तुम्हारा ।
बरबाद ज्ञान पुर हुवा सरकार तुम्हारा २ ॥
सेना बिगड़ गई है नहीं ज्ञानका पता ।
धन माल खज़ाने का न दरबान का पता ३ ॥
अब आगई है आपके शुभ कर्म की घड़ी ।
और कटगई है तेरे अशुभ कर्म की लड़ी ४ ॥
इस वक्तमें चेतन तुझे सोना न चाहिये ॥
अवसर यह तुझको हाथ से खोना न चाहिए ५ ॥

(६)

चाल गुलजार नसीम—हैं है मेरा फूल लेगया कौन हैं है मुझेदाग देगया कौन॥

चेतनका मोह नींदमे न उठना और विवेक दरबान
का आना और शुभ प्रकृति देवीसे कहना ॥

किसको तू जगा रही है प्यारी, किसको तू सुनारही है प्यारी१।
छाई इसे मोह नींद भारी। है अक्ल यहां पे गुम हमारी २।
सर हमने भी बहुत देदे मारे। कै बार जगा जगाके हारे ३।
मुमकिन नहीं अपना सर उठावे। कहीं हाथया पांवभी हिलावे४
इस नींदने ऐसाहै सताया। सब राजको खाकमें मिलाया ५
जो कालअनादसे यूं सोवे। उस राजकी सुधि कहां से होवे६
इस राजको कौन था संभाले। उठनेहीके पड़रहे हैं लाले ॥७॥
हम से तो नहीं उठाया जावे। तूही जो जगावे तो जगावे ८॥

(७)

चाल ठुमरी मांढ-उठवीनती सजन म्हारी मानरे न सोवो रैन थे ढ़ी है पिहरवा ॥

शुभ प्रकृति देवी का चेतनको जगाना ॥

—.०—

उठ वीनती चेतन म्हारी मानरे न सोवोकालबीतोहै चेतनवा। टेक
निंदिया को त्याग अरे । करम हरण को ॥
तोहे सुनाऊं तोरे हितके वचनवा ॥ उठ० ॥ १ ॥
ज्ञानी जन जाग रहे । ध्यान धरन कूं ॥
काहे सोवत मोरे भोलेसे चेतनवा ॥ उठ० ॥ २ ॥
बलिहारी जाऊं मैं । मेरे चेतन पे ॥
प्यारे चूमत तेरे सोहने चरणवा ॥ उठ० ॥ ३ ॥
आई अबहूं मैं । चेत करन को ॥
काहे जागत नाहीं प्यारे चेतनवा ॥ उठ० ४ ॥

(८)

चाल-अंग्रेजी नजन । सुनले देवी बातें मेरी कान लगाकर तू झटपट ॥

विदूशक का आना ॥

—०—

सुनले देवी बातें मेरी कानलगाकर तू चटपट ॥ टेक ॥
चेतनको हम जानें मानें बड़ा हटीला है नटखट ।
तेरे उठाए से नहीं उट्ठे चाहे मिला तू सौ सटपट । १ ।
लंदन देखा फ्रांस देखा अमरीका काबुल मेरठ ।

क्या जानें हम क्या क्यां देखा दुनियामें लाखों गटपट । १ ।
हमसे ज़्यादा और मियाना कौन बता हमको झटपट ।
शाहे विदूशक ज्यैंटिलमैनोंको छिन में करदे लटपट । ३ ।
जो चाहें हम इसे जगाना अभी जगादेवें चटपट ।
परहमको क्या ग़रज़ पड़ी बे लतलब कौन करे खटपट । ४ ।

(९)

चाल तेरी छलबल है न्यारी तेरी कलबल है प्यारी करो बाते न मोसे संवरिया जान ॥

शुभप्रकृति देवीका विदूशकको जवाब देना ॥

—— o ——

तेरे अल्छल हैं भारी ॥ तेरी छलबल है न्यारी ।
करो बानें न झूठी ।विदूशक मान ।
तेरी बातें हैं खाली । तू बड़ा ही है जाली ॥
तेरी बातों का हमको नहीं परमान ॥
जो तू मांगे दूंगी दान । राखूंगी तुम्हारा मान ॥
चेतन को आके उठावो इस आन ।
वरने धोकेके साथ । करो हमसे न बात । करो औरों से घात ।
अजी वाह वाह वाह । वाह वाह वाह ॥
वाह वाह वाह । तेरे अलछल० ॥

(१०)

चाल नाटक-सीरतमूरतमें चंदा ॥

विदूशकका जवाब देना और चला जाना ॥

हरफ़नमें सबसे आला । जानो मत भोला भाला ॥

शकलमें बन्दर । पूरा मछन्दर ॥ वाहरे कलन्दर वाह जीवाह ॥
जाता हूं लाताहूं आके लगाता हूं चेतन के कानोंमें फोनोग्राफ़॥
तो भी न जागेतो मुझ को लगाना पड़ेगा वह बिजलीकाटेलीग्राफ
लन्दन चलकर सर्जन बनकर ॥
झट नशतर से साफ हटादूंगा जाला ॥ हरफ़नमें • ॥

(११)

चाल ठुमरी-अरे-मुबे छोडो मोरी बैय्यांरे मुरकयां ॥
शुभप्रकृति देवीका अफसोस करना ॥

अब कैसे कर मैं जगाऊंरे जियरवा ॥
मैं तो जगाये तोहे हारीरे जियरवा ॥ टेक ॥
लुट गया ज्ञान ध्यान सब तेरा ॥
तोहे नहीं प्यारे ॥ कछु भी खबरवा ॥ १ ॥
बीताकाल अनादि नींद में ॥
अजहूं पड़े हो पीये मोह की मदरवा ॥ २ ॥
मैं तो सारे जतन कर हारी ॥
कैसे मनाऊं क्या बनाऊंरे जियरवा ॥ ३ ॥
कोई नहीं हितकारी हमारा ॥
किस को बुलाऊं मैं सुनाऊंरे जियरवा ॥ ४ ॥

(१२)

चाल इंद्र सभा—घरमें यां कौन खुदाके लिये लाया मुझ को ॥
विवेक दरवानका शुभप्रकृति देवी को खबर देना कि राजा चेतन
के महाराज विचार मोहित तशरीफ लाते हैं ॥

दुःख सभी छिनमें महारानी हटे जाते हैं ॥
देखिये राजाके प्रोहित यह विचार आते हैं ॥ १
बस अभी आके यह तदबीर बतादेवेंगे ॥
यह उठादेवेंगे चेतन को अबार आते हैं ॥ २ ॥

(१३)

चाल नाटक-पिया आए ना । अरी हमसे सहा दुख जाय ना ॥
विचार प्रोहित का आना और शुभप्रकृति देवीका
विचार से कहना ॥

तुम आवो ना । अरे आके राजा को जगावोना ॥
मैं जगाके मनाके सुनाके थकी ॥
तुम आवो ना अरे आके राजा को जगावो ना ॥ टेक ॥
मैं तो समझी थी है आसान जगाना इसका ॥
यह तो मुशकिल है मोह नींद हटाना इसका ।
मोहकी नींद कोई भूल न सोना साहेब ॥
वरना हो जायगा मुशकिल यूं जगाना उसका ॥
सुधि आयना, सिर हिलायना, उठ जायना ॥ तुमआके०१ ॥

(१४)

चाल नाटक-कहां से आप आये हैं ॥ जो यां तशरीफ लाये हैं ॥
विचार प्रोहितका आना और शुभप्रकृति देवीकी स्तुति करना
और चेतनके जगानेकी तरकीब बताना ॥

हमारे अच्छे दिन आए हैं ॥ जो तुम दरशन दिखाये हैं। टेक
प्यारी तेरे चरणका भया हमारे वास ॥

अब हमको निश्चय हुआ अशुभ करम भये नाश ॥
सभी अब दुःख भुलाये हैं । जो तुम दरशन दिखाए हैं । १
सुख देवे दुःख पर हरे यही तुम्हारा काम ॥
विघ्न सभी छिन में नसे सुनत तुम्हारा नाम ।
आज आनन्द छाये हैं ॥ जो तुम दरशन दिखाए हैं । २ ।
चेतनको मोह नींदमें बीता काल अनाद ।
बिनजिनवानीके सुने हटे नहीं परमाद ॥
यही हम सुनते आए हैं । जो तुम दरशन दिखाए हैं ॥ ३ ।
जिनवानीको हेसती बेगी लेवो बुलाय ।
चेतनको मोह नींदसे देगी आन जगाय ।
यही हम निश्चय लाए हैं । जो तुम दरशन दिखाए हैं । ४ ।

(१५)

चाल ठुमरी—आगन लायके पिया हाय गये हरधीर ॥
शुभप्रकृति देवीका जिनवानीको बुलाना और याद करना ॥

आगम गाय के । प्यारी आय हरो मोहे पीर आगम गाय के ॥
धर्म धनुष जैनवानीका तीर ।
तीर लायके ॥ प्यारी आय हरो मोहे पीर आगम० । टेक ।
तत्व सुनायके मोह हटावो ।
नींदसे चेतनको आन जगावो ॥
कासे कहैं पीर । परमत मोहके तीर ।
गये चित चीर । नही मन धीर री ॥

प्यारी आय हरो मोहे पीर आगम० । १ ।
तूनेही मिथ्या अंधेर उड़ाया ॥
जीवोंको मुक्तीका रसता बताया ॥
आके करो धीर । अमृत ज्ञान का नीर ॥
पड़े चित सीर । मिटे सब भीर री ॥
प्यारी आय हरो मोहे पीर आगम० ॥ २ ॥

(१६)

चाल नाटक–जावो जी जावो बड़ दानके दिलाने वाले ॥
जिनवानीका आना और शुभप्रकाति देवीका जिनवानी
की स्तुति करना ॥

———:0:———

आवो जी आवो भ्रम भावके मिटाने वाली ।
धीर बंधानेवाली । रसते लगानेवाली ॥
समकित दिलाने वाली । कुमति हटाने वाली ॥
आगम परमाण बनके तत्वोंके दिखानेवाली । आवो० टेक ॥
चेतन को आज मोह नींद में मैं आन देखा ।
मोहको पापी निर्दई बेईमान देखा ॥
पापीने जादू डारे । चेतन को कर मतवारे ॥
सारे हैं काम बिगारे ॥ दुःख दिए हैं भारे ।
तू हितकारी । है दुखहारी । है सुखकारी कलमलहारी ।
हे शासन दरशाने वाली ॥ आवो० ॥ १ ॥

(१७)

चाल नाटक—तुम्हें दृगा मैं बाकी खबरिया जान ॥

जिनबानीका कुमतिकी बुराई दिखलाना और सबको उपदेश देना ॥

ज़रा देखो तो आके कुमति की चाल ।
पड़ा कैसे है चेतन बिपत के जाल ॥ ज़रा० टेक ॥
भारी अलछल । दुख कारी सारे छलबल ॥
मचा दी सारी हल चल ।
न कुमति का नाम लो ॥ ज़रा० १ ॥
कुमति संग करोगे । निशिदिन दुःख भरोगे ।
कुमता जादूगारी ॥ दुःखकारी सुखहारी ।
ऐसा जाल बनाया ॥ सबको आन फंसाया ।
क्या नोकर, अफ़सर, कमतर, बरतर, जलचर, नभचर इंद्र,
सुरनर देखो तो आके कुमतिकी चाल ॥ २ ॥

(१८)

चाल नाटक ॥ चलती चपला चंचल चाल सुंदरिया अलबेली ॥

जिनबानीका चेतन को जगाना ॥

—— ,o ——

उठतू चेतन चतुर सुजान सुन मनला जिनबानी ।
क्यों मोह मदमाता सोवे ॥ आतम आनन्द रस खोवे ॥
हो चित आनन्द स्वरूपी ॥ उठतू० ॥
पर परनति को छोड़ दे देखो आप स्वरूप ।
तूही भव शिवरूप है ब्रह्मरूप बे रूप ॥

हां हां चिन मूरत वाले। ओ हो हो भोले भाले॥
क्यों सो गये हो अज्ञानी॥ उठ तू चेतन०॥

(१९)

चाल इंद्रसभा॥ घरसे यां कौन खुदाके लिये लाया मुझको॥
चेतन का जागना और हैरान होकर गाना॥

—o—

मोहकी नींदसे है किसने जगाया मुझको।
धर्मका नाम अहो किसने सुनाया मुझको। १।
जागता हूं कि मैं हूं ख्वाबमें आखिर क्या है।
माजरा क्या है नहीं भेद है पाया मुझको। २।
मोह तम किसने हता ज्ञानका परकाश हुवा।
नज़र अब आने लगा अपना पराया मुझको। ३।
मैं तो मिथ्यात्वकी निद्रामें पड़ा सोता था।
तत्त्वका रूप दिखा किसने जगाया मुझको। ४।

(२०)

चाल नाटक॥ तूहै बड़ा बदकाररे तोहे नाहीं खबर तोहे नाहीं खबररे
जिनबानी का चेतन को जवाब देना॥

—

तू है बड़ा नादानरे तोहे नाहीं खबर तोहे नाहीं खबररे॥ टेक।
मैं जिनबानी जगत दिवाकर।
प्यारे हूं मैं तेरी हितकाररे। तोहे नाहीं०॥ १॥
मैंनेही मिथ्या अंधेर उड़ाकर।
प्यारे तुझको किया बेदाररे। तोहे नाहीं०॥ २॥

राज अरु पाट हुवा सब अबतर ।
प्यारे होजा तू होशियाररे । तोहे नाहीं० ॥ ३ ॥
ज्ञान वज़ीर बुलावो झटकर ।
प्यारे राज को लेना संभाररे । तोहे नाहीं० । ४ ।
मैं शुभचिंतक तव निशबासर ॥
तेरेगले का हाररे । तोहे नाहीं० । ५ ।
जाती हूं उपदेश सुनाकर ।
आ तोहे कर लूं प्याररे । तोहे नाहीं० । ६ ।

(२१)

चाल ग़ज़ल ॥ करूं क्या हाय इस दिलका इलाही सख्त मुशकिल है ॥
राजा चिदानन्द का जिनवानीका धनवाद गाना ॥
और जिनवानी का चलाजाना ॥

—:0:—

ज़बां से तो अदा अहसां तुम्हारा हो नहीं सकता ।
करूं तन मन से तो इनको भी यारा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
जगाया आपने मुझको पड़ाथा ख्वाब ग़फ़लत में
हितू कोई तुम्हारा सा हमारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
स्वारथ के सभी साथी जगत सब छानकर देखा ।
जगतमें आप बिन कोई सहारा हो नहीं सकता । ३ ।
धरूं सर अपना जिनवानी तुम्हारे सार चरणों में ।
जुदा होना तुम्हारा पर गवारा हो नहीं सकता । ४ ।

(२२)

तर्ज इन्द्रसभा-अरे लाल देव इसतरफ जल्द आ ॥

चिदानन्दका विवेक दरबानको दरबार के लिये हुकम देना।

अरे ओ विवेक आ इधर ध्यान कर।
जा दरबार जल्दी से तय्यार कर। १।
सुना जब से हैं राजका मैंने हाल।
परेशानी है मेरेजीको कमाल। २।
खबरदार दरबार होवे शिताब।
कि है ग़म से बसहाल मेरा खराब। ३।

(२३)

तर्ज इन्द्रसभा--अरे लालदेव इसतरफ जल्द आ।

ज्ञान मंत्रीका दरबारमें आना। और राजाको हालसुनाना।

महाराज चेतन सुनो मेरी बात।
कि जाता रहा आपका राज पाट। १।
यह चेतन नगर भी तबाह होगया।
जरा देखिये तो कि क्या होगया। २।
लुटा ज्ञान दरशन खज़ाना तेरा।
चिदानन्द क्या तुझपे परदा पड़ा। ३।
तेरी शक्ती की भी तबाही हुई।
जो सेना थी घर अपने राही हुई॥ ४॥

विज़ारत मेरीख़ाकमें मिलगई।
जवानी मेरीग़मसे है ढल गई। ५।
मेराकाम था बस जिताना तुझे।
कोई दोश फिरना लगाना मुझे॥ ६॥

(२४)

तर्ज इन्द्रसभा--अरे कालदेव इस तरफ जल्द आ।
राजा चिदानन्दका ज्ञान मंत्रीसे राज बिगड़नेका कारण पूछना॥

अरे ज्ञान है क्या यह सच जो कहा।
अगर सच है तो इसका बाइस बता। १।
खबर तूने पहले न क्यों इसकीदी।
बता किस लिये यह तबाही हुई। २।
तू था ज़िम्मेवार इसमेरे राजका।
मेरे ताजका और मेरे काज का। ३।
है अफसोस तू बेख़बर होगया।
पड़ा ऐसमें या कहीं सो गया। ४॥
बता हाल अब इसका सारा मुझे।
वगरना सज़ा दूंगा बस मैं तुझे। ३॥

(२५)

तर्ज गजल--इलाजे दर्ज दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।
ज्ञान मंत्रीका राजा चिदानन्दको कारण बताना॥

दोश मेरा नहीं चेतन सुनो सच सच सुनाऊं मैं।

वजे जो है वह सुन लीजे नहीं तुमसे छुपाऊं मैं । टेक ॥
कुमत वश तुम हुए राजा राज की बात सब भूले।
पड़ेथे मोह निद्रामें कहो क्योंकर जगाऊं मैं ॥ १ ॥
क्रोध मद लोभ माया के सदा गढ़ बीच रहते हो ।
कामका है लगा पहिरा कहो यहां कैसे आऊं मैं ॥ २ ॥
फंसा विषयोंमें चित तेरा कुमतके घर किया डेरा ।
चले कुछ बसनहीं मेरा कहो कैसे बनाऊं मैं ॥ ३ ॥
आज है पुन्यउदे आया खुली जो नींदसे आंखे ।
खबर पाते हुवा हाज़िर हाल तुझको सुनाऊं मैं ॥ ४ ॥

(२६)

तर्ज़ ग़ज़ल-मेरी आह का तुम असर देख लेना ॥
चिदानन्द का अफ़सोस करना ॥

कुमतने अजब हाल मेरा बनाया ।
है अफसोस मैं इसके धोकेमें आया ॥ टेक ॥
बनावटकी थी सारी कुमताकी बातें ।
अजब जालमें इसने मुजको फंसाया ॥ १ ॥
मुझे जालसे नाथ वेगी निकारो ।
है चेतनने चरणों में सरको झुकाया ॥ २ ॥

(२७)

तर्ज़ नाटक ॥ आज मोरे प्यारे गुलशनमें आई वहार ॥
(ज्ञान मंत्रीका चिदानन्दको तसल्ली देना)

सुनों जी जिया चेतन ऐसा बनावो न हाल ॥ टेक ॥

अब भी जो चेतो कहा मानो मेरा।
राजको लेंगे संभाल,संभाल जिया चेतन ऐसा बनावो न हाल १
समकित धरो अपने हिरदे में राजा।
कुमता को देंगे निकाल, निकाल जिया चेतन०। २॥
चेतनकी नगरीको फिर जो दबावे।
करमोंकी क्या है मजाल, ? मजाल जिया चेतन० ॥ ३ ॥
चेतन जो सुन लेते कहना हमारा।
क्यों ऐसे होते बेहाल,। बेहाल जिया चेतन०। ४।

(२८)

तर्ज़ इन्द्रसभा ॥ राजाहूं मैं क्रोमका और इन्दर मेरा नाम ॥
चेतनका विचार करना और ज्ञान मंत्रीसे तदबीर पूछना ॥

राजा हूं तिहुं लोकका और चेतन मेरा नाम।
कुमताके बशमें पड़ा नहीं मुझे आराम। टेक।
चेतन हूं चिद रूप हूं मैं देखन जानन हार।
अहो करम जड़ कौन हैं लगे हमारेलार ॥ १ ॥
ना मैं उनकी जातका और ना कुछ मेरा सगार।
मैं अविनाशी यह सभी विनासीक बदकार ॥ २ ॥
अजर अमर पद है मेरा और आनन्द मई सुभाव।
क्रोध मान मद लोभ बश होगया हाय कुभाव ॥ ३ ॥
मेरा लोकालोकमें है मुलकों मुलकों राज।
धोकादे सबलेलिया मुझे खबर भई आज ॥ ४ ॥

अब मंत्री कोई कला ऐसी कर परकाश ।
निज सुख सम्पति को लहूं करूं अरी कुलनाश ॥ ५ ॥

(२९)

तर्ज नाटक–सुनिये अय महरवां सुनये अय महरवां ॥
ज्ञान मंत्रीका राजा चेतनको तदबीर बताना ॥

—:'o'—

सुनये चेतन सरकार । सुनये चेतन सरकार ।
सुमतासे पूछो इसका विचार । सुनये० । टेक ।
वह जगरानी सब जग मानी ।
ज्ञानी भी सेते हैं उसका द्वार ॥ सुनये० ॥ १ ॥
शिवसुंदरकी सुमता सखी है ।
शक्ती अगम उसकी महिमा अपार । सुनये० २ ॥
बैरी हनन विभवतावेगी चेतन ।
सुमता को जलदी बुलावो अवार । सुनये० ३ ॥

(३०)

तर्ज जिला ॥ आई इंद्र नार कर कर सिंगार ॥
अथ राजा चेतनका सुमति को बुलाना ॥

आवो सुमति नार कर कर सिंगार ।
मेरे उरमंझार धर चरण सार ।
तुझ विन हूं ख्वार । निज रूप को दिखावो ॥ टेक ॥
मेरा राज पाट। सब ठाट वाट ।
गया टूट टाट हुवा बारा वाट ।

अब सूधे घाट। मेरीनय्या को लगावो ॥ आवो० १
मोह अति वीर। मोहे देत पीर।
बिन एक वज़ीर। कोई न तीर।
अबदेके धीर। मेरा मन समझावो। आवो०। २।
तू है चतुर मीत। सब जाने नीत।
कहो ऐसी रीत। चेतन की जीत।
मोसे करके मीत ॥ प्यारी वेगी चलआवो। आवो०।३।

(३१)

तर्ज इंद्रसभा—मामूर हूं शोखीसे शरारत से भरी हूं ॥
सुमति का आना ॥

मामूरहूं नेकीसे शरारत से वरी हूं।
सुमता है मेरा नाम मैं कर जोर खड़ी हूं। टेक।
शिवमगमें लगा देना यही कामहै मेरा ॥
और कर्म नाग विषके उतारन को जड़ी हूं। १।
जिसने सुनी मेरी बात वह पारसका बन गया।
निज गुणके दिखानेके गुणोंसे मैं भरी हूं। २।
लेजाती हूं शिवजीवको दुक्खोंसे बचाकर।
पाताल ना निगोद ना नरकोंसे डरी हूं। ३।
इस जीव के इस जगमें अरि कर्म से बढ़कर।
देखा ना सुना मैंने कोई सारे फिरी हूं। ४।
वस में किया है इन्द्र चन्द्र सबको इन्हों ने।
बचना इन्हों से देखना यह अर्ज़ करी हूं। ५।

भूले फिरो थे आपतो अनाद से मुझे ।
बतलाइये अब किस लिये में याद करी हूं । ६ ।

(३२)

तर्ज इन्द्रसभा—घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुजको ॥
राजा चेतन का सुमति से कहना ॥

तुझ बिना एक घड़ी चैन न आई मुजको
हाय कुमता ने मुसीबत यह दिखाई मुजको । टेक ।
बात हित की न कभी एक सुनाई मुजको ।
सरसे ला पावों तलक उलटी बताई मुजको । १ ।
चारों गतमें मुझे भरमाके नरकमें डाला ॥
सारेढूंडा न मिला कोई सहाई मुजको । २ ।
रात दिन रोया किया और पुकारा हा हा ।
पर किसी ने न कभी धीर बंधाई मुजको । ३ ।
न्यामत यादसे आताहै कलेजा मूहको ।
अब सुमति मेरी सुनो तेरी धुवाई मुजको । ४ ।

(३३)

तर्ज-मूंगा मुझे लेदेना मेरी गरदन मूंगों वाली मूंगा मुझे ले देना ॥
सुमति का जवाब ।

तूने कहना मेरा नहीं माना जिया तुझे बरजूं थी ॥ टेक ॥
तू गया कुमति की लार सुमति बनमें छोड़ी ।
नहीं ज्ञान सुमतकी बात सुनी आंखियां मोड़ी ॥ १ ॥

यह कुलटा कुमत कुनार तुझे छलदुख देगी।
कहो मैंने तेरेसे यही कही थी या न कही ।२।
मैंनें ऊंच नीच सब कही सुनाई जिनवानी ।
तू हुवा कुमति वश स्वार हमारी नहीं मानी । ३ ।
अब चेतन हिरदे सुमति धरो सुधेरे बिगड़ी ।
कोई देके कुमतिको दुहाग चलो शिवपुर नगरी । ४ ।

(३४)

तर्ज नाटक-काहे सरवुने कलपोना जिया ॥

चिदानन्द का जवाब ॥

---:०:.---

प्यारी काहे ताना देवे कलपाना जिया ॥ टेक ॥
कुमताकी वातोंमें आके । बेशक हमने धोका खाके ॥
विषयोंकी संगतको पाकेमहा दुक्ख हमपाये जाके। प्यारी० १।
जो जो हमने दुक्ख उठाया। सो हमसे नहीं जाय सुनाया।
सुमता यह कहना सच आया। जैसा कीना वैसा पाया। प्यारी०२

(३५)

तर्ज ठुमरी-मेरा प्यारोरी नगेना ॥ दे मारोरी नगेना ॥ जगके हारी वादीला नगेना ॥

[रिवाड़ी वालों की] सुमता का जवाब

---::0::---

अभिमानी तैं सुनीना । दुरध्यानी तैं सुनीना ।
जिनवानी तैं सुनीना । सुखदानी तैं सुनीना ।
सुना के हारी वानी तैं सुनीना । टेक ।

बाग अंग और सात भंग हैं तामें भेद छुपैना ॥
भिन भिन कर तुझको समझाया। आगमकी मन मांही धरीना १
सात तत्व खटद्रव्य पदारथ सो तैं याद करीना ॥
परमारथ तुझको बतलाया चेतनकी हितकारी करीना । २ ॥
चिकने घट पर बूंद पड़ी लाखों पर एक थंबीना ॥
चेतन जतन सभी करहारी ॥ तो मनकी गतिटारी टरीना । ३॥

(३६)

तर्ज ठुमरी ॥ बेहनिया मोरा आंगनापावन भयोरी ॥
राजा चेतन का जवाब

अब आवो प्यारी सुमति चरण उरधार ।
तेरी बात मोहे भाई मेरे चित में समाई ॥ अब० ॥ टेक ॥
तू जग मानी शिव पद दानी जी ॥
सकल सुखदाई ॥ हरत ममताई ।
हमारी बात बिगरीको दीजीयो संवार । अब० ॥ १ ॥
मुनी जन सुरगन तेरे गुण गावें जी ।
गत नरक हटावें । मन भरम मिटावें ।
हमारी कही सुनी सारी दीजीयो निवार । अब० २
अब मैं त्यागूं कुमति कुनारी जी ।
सुनूं सीख तिहारी । तजूं तोहे नहीं प्यारी ।
कहे कुमति कोई चाहे लाख हजार । अब० ॥ ३ ॥

(३७)

र्ज नाटक ॥ जावो जी जावो बड़े दानके दिखाने वाले ॥

सुमति का जवाब ॥

ऐसी नहीं हूं जिया बातमें आजाने वाली ।
मैं हूं वेता जिनबानी शासनकी हूं शरधानी ।
सेवें ज्ञानी और ध्यानी सारी परनति मैं जानी ।
तत्वों का सार समयसारको बताने वाली ॥ ऐसी० टेक ॥
जनमों के बाद मैंने आज तुजको आन देखा ।
तुझसा ना चेतन दगाबाज बेईमान देखा ।
जब जब तूने दुख पाया । सुमताको याद कराया ।
सुखको जब तूने पाया । कुमतासे नेह लगाया ।
कुमता काढ़ो फिर नहीं सारो । ऐसी यह परतिज्ञा धारो ।
यों नहीं धोका खाने वाली । ऐसी० ।

(३८)

तर्ज इंद्रसभा ॥ मामूर हूं शोखीसे शरारत से भरी हूं ॥

चेतन का जवाब ॥

मंजूर है सारी मुझे मतकर नहीं नहीं ।
जिन मतकी धुवाई तुझे मत कर नहीं नहीं ॥ टेक ॥
तेरे लिये त्यागी है कुमति आजसे मैंने ।
फिर नाम कभी लूंगा मैं उसका नहीं नहीं ॥ १ ॥
समकितकी कसम प्रीत सुमतिको न तजूंगा ।
बचनोंसे कभी अपने फिरूंगा नहीं नहीं ॥ २ ॥

अब सीख सुमति में ही रहूंगा मैं रात दिन।
जिनबानी की आज्ञासे हटूंगा नहीं नहीं ३ ॥
पहले तो जो हुवा सो हुवा माफ़ कीजिये।
आगे को सुमति यह कभी होगा नहीं नहीं ॥ ४ ॥
अब आवो सिंघासन पे मेरे बैठिये प्यारी ॥
चेतन का तेरे बिन गुज़र होगा नहीं नहीं ॥ ५ ॥

(३९)

तर्ज नाटक ॥ सुनलें बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झटपट ॥
राजा चेतन का कुमति से नाराज होना ॥

—::०::—

सुनले कुमता बात हमारी ध्यान हीयेमें तू धरकर ॥ टेक ॥
मैंने तुझसे प्रीति लगाई। तैं उलटी मेरे गल आई।
जा पटका मोहे नरकनमें। सुनले० १ ॥
आग बनाया पवन बनाया। जल थल वनसपती कहलाया।
खूब फिराया वन वनमें ॥ सुनले० ॥ २ ॥
बिच्छू सांप सभीगत पाई। कानखजूरे कान सलाई।
आती नहीं कुछ बरणनमें ॥ सुनले० ॥ ३ ॥
पशूगत में बहू नाम रखाये। बध बंधन छेदन दुख पाये।
याद किये दुख हो मन में। सुनले०। ४।
चेतन नेह तजा अब तेरा। पीछा छोड़ विधाता मेरा।
जावो जहां हो तेरे मन में। सुनले०। ५॥

(४०)

तर्ज नाटक ॥ सुनिये सुनिये सरकार करूं क्या आशकार ॥

कुमतका जवाब ॥

—·०·—

सुनये सुनये सरकार। दिया मुझको तो टार।
मैं भी करहूं पुकार। मोह राजा पै अब ॥ टेक ॥
कहूं सारा यह हाल। देऊं ऐसी मैं चाल।
तुझे करदूं पामाल। मुझे जानेगा तब। सुनये० । १ ।
क्या है जाने का ग़म। नहीं मैं भी तो कम।
तेरा हो नाक में दम। करूं ऐसा यह ढब। २ ॥
सुनो मेरे यह बैन। होने दूंगी न चैन।
इसे मानों तुम ऐन। जो मैं कहती हूं सब ३ ॥
अब तु होजा होशयार। करले लशकर तय्यार।
कहा सोच विचार। मेरा कोप है गज़ब ४ ॥
जाऊं मोहे के तीर। राग द्वेश वज़ीर।
तुजे देवेंगे पीर। बंद करदेंगे लब। ५।
देखो चेतन तमाम। बने मेरे गुलाम।
मुझे करते सलाम। छूट सकते हैं कब। ६।

(४१)

तर्ज। (नाटक) (चलत) राजा चेतन का कुमत को दरबार से निकाल देना ॥

जावो यहां से चली जावो। मत मूंह दिखलावो ॥ टेक ॥

बक बक न बनावो। और बात न सुनावो।
न ज़बान को हिलावो। झटपट चली जावो। १।
तू है कूरवदकार। सारे पापों की सरदार।
सारे जाने तेरी सार। चलो छोड़ों दरबार। २।
जो हो कोई बुद्धीवान। तेरी करे ना पहिचान॥
और श्रीभगवान तुझे करें बेनिशान। ३॥

—:o:—

इति न्यायमतसिंह रचित चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक का प्रथम ऐक्ट समाप्तम्॥

न्यामत विलास अंक १२

चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक

दूसरा ऐक्ट

कुमता का अपने पिता राजा मोह से फरयाद करना। राजा मोह का चेतन पर चढ़ाई करना और राजा चेतन का सुमता का कहना न मानना और राजा मोह के धोके में आना और हारना॥

॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥

(४२)

तर्ज नाटक—सुनये सुनये सरकार ॥

कुमताका अपने पिता मोहके पास फरयाद करना ॥

सुनिये सुनिये पिता । मेरी सारी विथा ।
है यह ग़मकी कथा । जो मैं कहती हूं अव । टेक ।
मुझे चेतनने टाल । किया हाल वेहाल ।
देई घरसे निकाल । हाय कैसा ग़ज़व । १ ।
दिया कुमता दुहाग । हुवा सुमता सुहाग ।
किया विषयों का त्याग । नहीं क़ाबू में अव । २ ।
हाल किसको सुनाऊं । चाल किसको दिखाऊं ।
कहो कैसे वनाऊं । माजरा है अजब । ३ ।
तेरा छूटा है राज । ताज काज समाज ।
तुझे आती न लाज । बंद है तेरा लव ॥ ४ ॥
तेरे फ़ोजो वज़ीर । सारी करमोंकी भीर ।
कहो राजा यह वीर । काम आवेंगे कव ॥ ५ ॥

(४३)

तर्ज नाटक-सुनले वीवी वात हमारी कान लगाकर तु झटपट ॥

राजा मोहका कोप करना और अपने राग,
द्वेश मंत्रियोंको हुकम देना ॥

— ० —

सुनलो मंत्री वात हमारी कानलगाकर तुमझटपट ॥ टेक ॥

चेतन चेतनपुरका स्वामी। विमुख हुवा हमसे बदकामी।
और नित करता है खटपट। १।
ऐसी कोई बात बनावो। या कोई हिकमत बतलावो।
पकड़ा जावे वह नटखट। २।
बसमें जो उसको करलावे। बेशक माल खज़ाना पावे।
इसमें नहीं होगी गटपट। ३।
साम दाम भय भेद दिखावो। जूं तूं कर चेतन को लावो।
चाहे पिलावो सौ सटपट। ४।

(४४)

तर्ज-अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

राग द्वेष मंत्रियोंका जवाब देना ॥

—.०.—

सुनो मोह राजा हमारा कलाम।
कि मुशकिल है हमसे तो होना यह काम। १।
सुमत ज्ञान जब तक है चेतन के पास।
कहो कैसे हो उसपे जानेकी आस ॥ २॥
न तक़रीर तदबीर कोई चले।
विज़ारत वहां खाकमें सब मिले। ३।
न दरबारमें कोई ऐसा जवां ॥
हो जाकर जो सुमताके सनमुख वहां। ४॥

(४५)

तर्ज नाटक--सुनिये सुनिये सरकार ॥

कुमति की माता विषियासुरी का अपने सप्त व्यपन कुमारन सहित मोह के दरबार में आना और गुस्से में आना और चेतन को पकड़ने के लिये जाना ॥

—— :o ——

सुनिये सुनिये सरकार । कहा सोचो विचार ।
मैं हूं जाऊं अबार । लाऊं चेतन को अब । टेक ।
कैसे ज्ञान वज़ीर । कैसी सुमता सुशीर ।
सबको डारूं मैं चीर । लाऊं काबू में सब ॥ १ ॥
उसकी समकित को तोड़ । तप संजम मरोड़ ।
शील गागर को फोड़ । करूं लाखों गज़ब ॥ २ ॥
कौन सनमुख निहारे । मेरे छलके अगाड़े ।
कौन बातें उचारे । बंद करदूंगी लब ॥ ३ ॥
कहीं मंतर चलाऊं । कहीं जंतर चलाऊं ।
सारी दुनिया हिलाऊं । कहूं क्या क्या मैं ढब ॥ ४ ॥
आवो सातों कुमार । चलो तुम मेरे लार ।
ज़रा रहना होशियार । लाऊं चेतन को अब ॥ ५ ॥

(४६)

तर्ज नाटक--चलो हिल मिल खुशतर दिलवर ।

विषियासुरी का चेतन के दरबार में आना । और चेतन को विषयबाग की सैर को चलने के लिये कहना ॥

चलो हिल मिल खुशतर दिलवर हम सब यारियां ।

हो प्यारियां गुलकारियां । सब न्यारियां । हमवारियां ।
अटखेली अलबेली । सुहेली सुहेली दिलदारियां ।
हो प्यारियां । हम न्यारियां मतवारियां । सब वारियां ॥१॥
सब कलियां खिलरहीं बाग में हो प्यारे ।
जुई जाई चंपा चमेली । लाल किवाड़ी फुलवारी हो प्यारे ॥
गावें गनका बाग़मेरे । आई हैं सारी परनारी मतवारी हो प्यारे
मांस मदरा संगमेरे जूवा चोरी शिकारी शिकारी होप्यारे चलो॰२

(४७)

तर्ज़ ग़ज़ल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ।
चेतन का ज्ञान वज़ीर से सैर से लिये कहना ॥

—:०:—

अय ज्ञान आज बाग़ की हम सैर करेंगे ।
जलदी से जाएं अब नहीं यहां देर करेंगे ॥ १ ॥
विपियासुरी है संग में है सैर का मोका ।
दो चार रोज़ अबतो वहीं सैर करेंगे ॥ २ ॥

(४८)

तर्ज़—मुगा मुझ केदेना ॥
सुमत का चिदानन्द को समझाना ॥

— ० —

जिया यह विपियासुरी नार हमें छलने आई । टेक ।
कोई विषय सरूप दिखाय बना छलबल बतियां ।
अरे यह कुटला बदकार धरम हरने आई ॥ १ ॥

तेरा तप संजम और शील दान सब नाश करे।
अरे पोट पाप की सीस तेरे धरने आई ॥ २ ॥
अरे सत मारग को छोड़ नरक तेरा बास करे।
तुझे मदरा मोहं पिला के बश करने आई ॥ ३ ॥
हैं इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र सभी इसके बश में।
हो कुमत सुताकी पक्ष तेरे से लड़ने आइ ॥ ४ ॥

(४९)

तर्ज नाटक--ऐसे ऐसे भूत छलावे हमने लाखों देखे भाले ॥
ज्ञान मंत्री का राजा चिदानन्द को समझाना ॥

——:.0.:——

ऐसे ऐसे काम छलावे हमने लाखों देखे भाले।
तप शील के डिगाने वाले। दोश के लगाने वाले।
जीवों को बहकानेवाले। धोके माहीं लानेवाले। ऐसे०। टेक।
इनकी बातों में जो कोई आता है जो आता है।
वह सीधा नरकों माहीं प्यारे जाता है वह जाता है।
छोड़ो छोड़ो हठकी बातें। धारो धारो हितकी बातें।
सुमता भाषी जैसी बातें। क्यों करतेहो बहकी बातें। ऐसे० १
प्यारे बिषियांकी बातों को तू जाने है तू जाने है।
जान बूझ के उलटी बुद्धी क्यों ठाने है क्यों ठाने है।
हारा हारा सब जग हारा। इसने अपना जाल पसारा।
भूल नहीं करना पत्यारा। सबका इसने काम बिगारा।
इसे जान लेवो तुम। नहीं मौत से है कम ॥

इसे जानते हैं हम । नहीं दाव समझे तुम ।
अजी जावो जावो छोड़ो छोड़ो।कैसे तुमने झगड़े डाले । ऐसे०२

(५०)

तर्ज गज़ल ॥ पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥
चिदानन्द का जवाब देना ।

अय ज्ञान नसीहत तेरी मनको नहीं भाती ।
तबियत है सैर करनेको रोकी नहीं जाती १ ।
समता तू मुझे सैरसे भी रोकती है क्यों ।
सोहबत मुझे दरबारकी हरदमनहीं भाती । २
इसरार क्यों है मेरीसमझमें नहीं आती ॥
तकरार तुम्हारी मेरेदिल को नहीं भाती ३ ॥

(५१)

तर्ज ठुमरी ॥ नैना कसूंमी रंग हो रहे ॥
सुमतका चेतन को फिर समझाना ॥

अरे सुनरे चिदानन्द प्यारे । चिदानन्द प्यारे चिदानन्द प्यारे।
तुझे कैसे समझाऊं सुनरे चिदानन्द प्यारे ॥ टेक ॥
अरे तूही है आतम वहीरातम परमातम प्यारे ।
तूही तीहूं जग राय । सुनरे० १ ।
अरे तेरे कैसे कुमति घटछाई । सुमति बोराई । कुगति दरसाई
नहीं समझे समझाय । सुनरे० ॥ २ ॥
अरे परनारी अनारी महा दुखकारी । सहै दुख भारी ।

पड़े दुरगति जाय । सुनरे० ३ ॥
अरे हितकरले । सुगति पथ पड़ले । सुमति हिये धरले ।
शिव सम्पति पाय ॥ सुनरे० ॥

(५२)

तर्ज जिला ॥ आई चतुर नार कर कर सिंगार ॥
ज्ञानी मंत्रीका चिदानन्दको फिर समझाना ॥

सुन समयसार । कछु कर बिचार ।
मत विषयलार । जावो हमको छार ॥
चहुं गतिमें ख्वार दुख भरते फिरोगे ॥ टेक ॥
चेतन सुजान ॥ समकित निधान ।
करके कुध्यान । क्यों हो अयान ।
तज स्वरग थान घोर नरक पड़ोगे । सुन० १ ॥
मत मन में हर्क । विषयोंसे सर्क ।
यह देत नर्क । मत जान फ़र्क ।
कर सुमति तर्क कहा कुमति बरोगे । सुन० २ ॥
मत शूल बीच । अमृत को सींच ।
लख कुमति कींच । मत आंख मींच ॥
कहीं ऊंच नीच मांहीं पड़के मरोगे । सुन० । ३ ॥
मत रतन छंड । ले कंच खंड ॥
कहे मुनी तरंड । सम्पत न भंड ।
लहो रतन करंड । शिवपदको गहोगे ॥ ४ ॥

(५३)

तर्ज नाटक—अरे मुवे छोड़ो मेरी बयां जी मुरकियां ॥

सुमति का चिदानन्द को फिर समझाना ॥

—०—

अब कैसे कर समझाऊं जी जियरवा । टेक ।
सब विधि कर समझा मैं हारी ।
एक न मानी मेरा दूखे जी जीयरवा । अब० । १ ।
नर्क निगोद से तुझको निकाला ।
कहा भूलगये वहां के दुख जी जीयरवा । अब० । २ ।
चारों गती में रही संग तेरे ।
अब जिया काहे को करोहो जी बिछरवा । अब० । ३ ।
यह दिपिया मेरी कबकी बैरन ।
शिव मग जाते रोक लियो जी डगरवा ॥ अब० ॥ ४ ॥

(५४)

तर्ज ठुमरी—क्यों न लेते हमारी खबरियारे ॥

सुमति का चेतन को आखरीवार समझाना ॥

—०—

सुन लीजो चिदानन्द हमारी रे ॥ टेक ॥
धोके से जीया आते हो त्रिपिया की चाल में ।
लेजागी तुमको बांध के करमों के जाल में ।
बहुती होवेगी ख्वारी तुम्हारी रे ॥ १ ॥
मानो नहीं जो कहना तो इतना तो कीजिये ।
यह तत्व मुद्रिका मेरी उंगरी की लीजिये ।

इसे समझो निशानी हमारी रे ॥ २ ॥
आवेगी काम तेरे अंगूठी कहीं यही ।
शायद मिलावे फिरभी हमें और तुम्हें कहीं ।
है यह भगवत की बानी उचारी रे ॥ ३ ॥
अच्छा हमारा आखरी तुमसे सलाम है ।
पछतावोगे ज़रूर पर इतना कलाम है ।
जो नहीं सुनते हो बातें हमारी रे ॥ ४ ॥

(५५)

तर्ज़ नाटक—खेल ओ मतवाले हो शैतान के हवाले ॥
विषियासुरी का चेतन को लेजाना । और ज्ञान
सुमति का छूटजाना ॥

आओ चेतन सुजान । मुझे बिषिया पहिचान ।
मेरा कहना यह मान । ज़रा यहां से तो चल ॥ १ ॥
काहे ध्यान लगावो । काहे तनको सुखावो ।
काहे सुमता पै जावो । ज़रा यहां से तो चल ॥ २ ॥
मांस मदरा उड़ावो । दूत कीड़ा रचाओ ।
परनारी बुलाओ । ज़रा यहां से तो चल ॥ ३ ॥
फिर नरक दिखाऊं । त्रिसथावर बनाऊं ।
सारी सुधबुध भुलाऊं । ज़रा यहां से तो चल ॥ ४ ॥
सत्य धरम हटाओ । मेरे संग चले आओ ।
फल योवन का पाओ । ज़रा यहां से तो चल ॥ ५ ॥

रंग नये दिखाऊं। ढंग नये बनाऊं।
चहुंगत में फिराऊं। ज़रा यहां से तो चल ॥ ६ ॥

(५६)

तर्ज नाटक—बूटी लाने का कैसा बहाना हुवा ॥
ज्ञान सुमति का अफसोस करना और दरबार छोड़ कर चले जाना ॥

—— ० ——

बाग़ों जाने का कैसा बहाना हुवा। बाग़ों जाने का।
प्यारा चेतन किधर को रवाना हुवा। बाग़ों जाने का। टेक।
देखो विषियाकी चाल। कैसा फैला के जाल लेगइ चेतन निकाल
वाका तीर एक दमबर निशाना हुवा ॥ १ ॥
अबतो चेतनका राज। हुवा सारा ताराज और हम सबको आज
हाय अफसोस ग़म का फ़िसाना हुवा ॥ २ ॥
लाखों करके विवेक। कहे हमने अनेक। सुनी चेतन न एक।
सुनके विषिया की बातें रवाना हुवा ॥ ३ ॥
चलो छोड़ो दरबार। कहा करना अबार। होगा चेतनही ख्वार।
जो वह अपनों को तजकर बीगाना हुवा ॥ ४ ॥

(५७)

तर्ज नाटक ॥ किसमत सबपर लाती आफत ॥
विषियासुरी का चेतन को विषय कूप में कैद करना ॥

——:०:——

ओबे चेतन जलदी से सुन कूंवे के अंदर जाकर गिरजा।
आग हवा में खाक में मिलकर आब के अंदर हो हो मरजा। १।

कुमति निकाली तूने मूरख बिन सोचे जो काम किया ।
हमने तुझको आजके दिनसे क़ैद किया यहां क़ैद किया ॥ २ ॥
सुमता बता कहां मंत्री बता कहां ।
देते थे तुझपे जां । उनका पता कहां ।
तू क़ैद हो यहां । पावे न को निशां ।
मैं जाति हूं वहां । कुमता रहे जहां । ओवे चेतन० ॥ ३ ॥

इति न्यायमतसिंह रचित चिदानन्द शिवसुन्दरी
नाटक का दूसरा ऐक्ट समाप्तम् ॥

न्यामत विलास अंक १२

चिदानन्दशिवसुन्दरी नाटक

तीसरा ऐक्ट

राजा चेतन का सुमतिरानीको यादकरना और सुमतिका राजा चेतन के पास पहोंचना और राजा मोह से चेतन को छुड़ाना कुमता का राजा मोह से फ़रयाद करना और राजा मोह का चेतन से लड़ना। राजा चेतन का सुमता का कहना मानना और राजा मोह को जीतना॥

॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥

(५८)

तर्ज गजल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

चेतनका एक रोज तत्व मुद्रीको अपनी उंगरी में
देखना और अपने हाल पर अपसोस करना ॥
और सुमति और ज्ञानको याद करना ॥

अहो मैं कौन किसने जालमें मुझको फंसाया है।
कुंवां किसका है यह यारो मुझे यहां कौन लाया है। टेक।
अंगूठी किसकी है यह मेरी उंगरी में नगीने की।
और इसपे तत्वका पद किसने यों अंकित कराया है। १।
इसे लखयाद आती है मुझे ज्ञान और सुमताकी॥
किधर ढूंढूं कहां जाऊं नहीं कुछभेद पाया है। २॥
मुझे अपनेमें और परमें फरक मालूम नहीं होता।
हमारे ज्ञानपे परदा अजब गफ़लत का आया है। ३।
विषय जो मेरे दुशमन हैं उन्हींसे मैं करीयारी।
सुमतिको छोड़ मेरा मन कुमति चक्करमें आया है। ४।
दियाथा तत्वका उपदेश जिनवानीने जो मुझको।
बड़ा अफसोस मैंने आज वह दिलसे भुलाया है। ५।
रिहाईकी मुझे सूरत नजर आती नहीं कोई।
जिधर देखूं उधर हरसू कुमति अंधेर छाया है। ६।
सुमत रानीसे जाकरके कोई मेरी खबर करदे।
छुड़ादे कैदसे अबतो बहुत मैं दुख उठाया है। ७।
ज्ञान आले खबर मेरी लबों पर जान आई है।

मुझे तेरी धुवाई है विषयने आ दबाया है । ८ ।
अरे सुन तो बिबेक हरदम तु रहताथा पास मेरे ।
कहो तो आज क्यों तूने मुझे दिलसे भुलाया है । ९ ।

(५९)

तर्ज इंद्रसभा-अरेलालदेव इस तरफ जल्द आ ॥
विवेक दरवानका आना ॥ और सप्त
व्यसन कुमारनका भागना ॥ चेतनको
कूवें से निकालना और सम्यक्त नगरको लेजाना ॥

——o——

न घबराओ चेतन है हाजिर बिबेक ।
हो होशयार आया तेरा वक्त नेक । १ ॥
भगाया है बिषयनको मैं मार कर ।
गये सबकेसब यहांसे वह हारकर । २ ।
पकड़ हाथ मेरा कूवेंसे निकल ।
तू सम्यक्तनगरीको जल्दीसे चल । ३ ।

(६०)

तर्ज नाटक ॥ शाहे नहां माहेज़मां ॥ कोई नहीं है तेरेसमां ॥
चेतनका अपने सम्यक्तनगरमे आना ॥
और भगवानका धनवाद गाना ॥

—— o ——

अय भगवान । सबसे महान । कोई नहीं जगमें तेरे समान ।
इन्द्र ईशान । सौ धर्म जान । सौ धर्म जान ॥
देव परी सारे सारैं हैं आन ॥ टेक ॥

भव भवमें तुम हो आधार। धर्म चरण हो हिये मंझार।
जिन बानीकी शर्ण हमार। समकित हो पुरकार। १।
जब लग घटमें होवें प्राण। होवे मेरा मैत्री ज्ञान।
तत्व उपदेश सुनूं हर आन। यह ही है मेरे श्रधान। २।
कुमता का हो सरवश नाश॥ सुमता हो हरदम हम पास।
गुन भरी हित भरी मनमें मेरे होवे प्रीति। हो नहीं अनीत।
प्राणोंसे प्यारे हों सब मीत। बैरीकी हार हमारी हो जीत।
घात करमसेहो केवलज्ञान केवलज्ञान। अंतमें पाऊं मैं निर्वाण ३

(६१)

तर्ज नाटक॥ फलकसे अय शहेआलम ग़जब टूटा गजब टूटा॥
सप्त बिषय कुमारन का अपने पिता राजा मोह के
पास दुहाई देना॥

———— ,o ————

दुहाई है दुहाई है दुहाई है दुहाई है।
मोह राजा सुनो म्हारी दुहाई है दोहाई है १।
बिबेक आया ग़ज़ब आया हमें सबको भगाया है।
हाल तुमको सुनाया है दुहाई है दुहाई है॥ २॥
गया चेतनको लेकरके हमें दुशनाम देकरके।
हम आये जान लेकरके दुहाई है दुहाई है॥ ३॥

(६२)

तर्ज नाटक॥ बहादुर जंगी सारे नंगी म्यान करो शमशेर॥
राजा मोहका कोप करना॥

सुनो कुमारो धीरज धारो अब नहीं होगी देर।

काम बुलाऊं वेग पठाऊं इसमें देर न फेर ॥ १ ॥
सारे मेरे हैं क़ानूमें क्या चीता क्या शेर ।
कौन जवां है ऐसा जगमें हमसे लावे छेर ॥ २ ॥
रीछ और बंदर सूरज चंदर सब हैं मेरेज़ेर ।
चेतनको मैं क्या समझूं एक छिनमें लूंगा घेर ॥ ३ ॥
फारिस लंदन अरमन जरमन इटली जैसलमेर ।
सारे मेरेवसमें काबुल तिब्बत बीकानेर ॥ ४ ॥
कान खजूरे सांप लंगूरे मेरीभरते टेर ।
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खन दिल्ली और अजमेर । ५ ॥
कबसे चेतन होगया ऐसा बेडर और दिलेर ।
भूल गया वह दिन माराथा नरकों माहीं गेर । ६ ॥

(६३)

तर्ज़ इन्द्रसभा ॥ अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ ॥
राजा मोहका कामदेवको बुलाना ॥

अरे कामदेव इस तरफ जल्द आ ।
संदेसा मेरा लेके चेतनपे जा । टेक ॥
तू दूतोंमें बस सबका सरदार है ॥
तेरेवसमें यह सारा संसार है । १ ॥
तू जाकर कहो बात चेतनसे यों ।
हुवा है बिमुख मोहसे अंध क्यों ॥ २ ॥

इसी में भला है कि आकर मिलो।
मेरी आन को अपने सरपे धरो ॥ ३ ॥
वगरना लड़ाई का सामान कर।
हो होशयार चेतन क्यों है बेखबर ॥ ४ ॥

(६४)

तर्ज नाटक--मै चंचल आफत हूं फितना बड़ादाना बड़ा स्याना ॥

कामदेव का आना और अपनी तारीफ करना ॥

— o —

एक आफ़त शामत है फितना। मेरा आना मेरा जाना। टेक
मैं आंका बांका हूं जितना। उतनाही नट खट मरदाना ॥
दुखकारी हूं बदकारी हूं। हां हां मैं अनहित कारी हूं।
मैं जाउं उसे भड़काऊं। अभी भरमाऊं। पकड़ कर लाऊं मैं ॥
अंतर मंतर जंतर तंतर छलबल हेरा फेरी क्या क्या क्या ॥
एक आफ़त शामत० ॥

(६५)

तर्ज लावनी (खड़ी चाल)

कामदेव का दूत बनकर राजा चेतन के पास जाना ॥
और मोह का पैगाम सुनाना ॥

— o —

सुनये चेतन बात हमारी ऐसा नहीं करना चहिये।
जो जो हुकम मोह का होवे वह सिरपे धरना चहिये। टेक।
किस कारण तुम तजी कुमति और काहे सुमति को वरलाये।
काल अनंत कुमति बश बीतें चौरासी में फिर आये।

मोहबली ने इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र सभी हैं भरमाये।
कोई सीस उठानहीं सकता फिरते हैं सब घबराये।
कहां वह राजा कहां तू चेतन तुझको नहीं लड़ाना चहिये।
जल्दी चलकर सीस मोह के चरणों में धरना चहिये॥ १
जब मोह राजा तीनलोक में इन्द्रजाल फैलाता है॥
किसी को ग्रीवक स्वर्ग किसी को नर्क निगोद दिखाता है॥
जन्तर जाने मन्तर जाने तन्तर खूब बनाता है।
उसकी माया वहही जाने भेद कोई नहीं पाता है॥
क्षत्री शरमा हरी हर ब्रह्मा जो उसमें फंसजाता है॥
ज्ञान कला सब जाय ध्यान धन कुछ नहीं पार वसाता है॥ २॥

(६६)

तर्ज नाटक—जाओ जी जावो बड़े दान के दिलाने वाले॥

राजा चेतन का कामदेव दूत को जवाब देना॥

—— ० ——

जावो जी जावो काम जीव के बहकाने वाले।
मनको फिसलाने वाले। नर्क दिखाने वाले।
शील डिगाने वाले। पापी बनाने वाले।
झूटी बातें बना के दोष के लगाने वाले। जावो जी जावो० टेक
यो जग सारा दुखवारा हमनें छान देखा।
तुझसा न कोई बदकार बेईमान देखा।
आज सुमता को पाया। कुमता को दूर हटाया।
जैन सासन चित लाया। यहही मेरे मन भाया।

जा वदकारी अनहित कारी । जानी मैं तेरी मकारी ।
हम धमकी में नहीं आने वाले । जावो जी जावो० ॥ १ ॥

(६७)

तर्ज आला (इसको चलत से और खड़ी ओर की आवाज से पढ़ना चाहिये)
कामदेव का कोप करके चेतन को जवाब देना ॥

—.०—

अब सुनलो जी चेतन काम कुमार के ।
यह वचन अपने उर आन ।
एजी मैं तो तोकूं सुनाऊं भिन भिन कर ।
अरे भय्या मानले हमारी आन ।
किसने वहकाया तुझे दीनी किसने सीख यह ।
अछा नहीं करना है मोह से बिगार ॥ १ ॥
सारा जग वसमें क्रिया है मोहराय ने ।
और इन्द्र चन्द्र सारे होरहे लाचार ॥ २ ॥
काल अनाद रहा तू उसके वन्द में ।
कहो अब कैसे छूट सके तू गंवार ॥ ३ ॥
भूल गया दुख तू नरक वा निगोद के ।
जहां एक सास में मरेथा ठारा वार ॥ ४ ॥
जल थल पवन बनाया तुजको मोह ने ।
पावक बनसपती दिया तन धार ॥ ५ ॥
करमों की फौज बलवान हार जावोगे ।
चहूं गति दुख फिरि भोगोगे अपार ॥ ६ ॥

ठैरोगे कैसे मेरे बानोंके तुम सामने ।
ब्रह्मा और नारायण सब गयेहार । ७ ।
रावनथा प्रति नारायण तिहूं खण्ड का ।
हार गया मुझसे पड़ा नरक मंझार । ८ ।
कीचकराय आदी धवल सेठजी ।
कहो कौन बचा मेरे तेजको निहार । ९ ।
भामंडल पदम सहसगती की कथा ।
कहा तूने नहीं सुनी शासन मंझार १० ॥
अब भी न मानै जो तू आन राजा मोह की ।
जानी हम होनी तेरी रहीहै पुकार । ११ ।
देखो बल चेतन है कैसा कामदेव का ।
निसंख कह रहा है भय्या यह तो जीव के दरबार १२ ॥

(६८)

तर्ज नाटक ॥ ऐसे तुझसे ऐरे गैरे मैने लाखों देखे भाले ।
राजा चेतनका कोप करके कामदेवको
दरबारसे निकालना ॥

———— ;o: ————

तुझसे शेखी करनेवाले मैंने लाखों देखे भाले ।
मेरे नाम सेती डरने वाले । धमकी सेती मरने वाले ।
चरणों माहीं पड़ने वाले । आज्ञा सिरपे धरने वाले। शेखी० टेक ॥
देखो देखो सीता रानी । द्रोपदीकी सुनो कहानी ।
तू हुआ है अभिमानी । बातें तेरी हमने जानी । शेखी० १ ।

चेतन सुमताकी जोड़ीको ज्ञानी ध्यानी पहिचाने हैं ।
तुजसे जैसे पापी याको क्या जाने हैं क्या जाने हैं ।
तुहै पापी तुहै पापी जीवघाती महापापी ।
दुष्ट काम माहीं व्यापी। कैसीखोटी रीती थापी ।
क्या देता है दम, तेरे दाव समझे हम ।
अभी मार डालें हम। हमें जानता है क्रम ।
अजी जावो जावो जी बचावो झूटे दमके भरने वाले शेखी० २।

(६९)

तर्ज नाटक ॥ सुनलें बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झट पट ॥
कामदेवका वापिस आकर राजा मोहको हाल
सुनाना ॥

सुन ले राजा बातें मेरी ध्यान लगा करतू झट पट । टेक
चेतन नहीं है बश में तेरे करले जो मन में हो तेरे ।
प्राण बचाकर आया मैं । सुनले० । १ ।
ऊंच नीच और गरमी नरमी । साम दाम भै भेद हट धरमी ।
सब करके समझाया मैं । सुन० । २ ।
चेतन ने कहना नहीं माना । लड़ने का मनसूबा ठाना ।
तुझको आन सुनाया मैं । सुनले० । ३ ।
चेतन ढिगफिर मैं नहीं जाऊं । ना चेतन पर हुक्म चलाऊं ।
अबके जा पछताया मैं । सुनले० । ४ ।
चेतन ने सुमता को पाया । अपना ज्ञान वजीर बनाया ।
देखत ही घबराया मैं सुनले० । ५ ।

(७०)

तर्ज ठुमरी ॥ लीजो लीजो हमारी खबरप्यारे ॥
मोहका राग द्वेष सैनापतीको फौजकी तय्यारीका हुक्म देना ॥

—— ० ——

सुनो मेरा हुकम अब तुम प्यारे । टेक ।
सैनापतीका पद दिया है राग द्वेषको ।
छिनमें उजाड़देंगे यह चेतनके देशको । सुनो० । १ ।
सैनाको मेरे सामने लावो संवारके ।
बाकी रहे ना कोई देखलो विचारके । सुनो० । २ ।
सातों करम जो सूरमा हैं उनको सुनादो ।
लेआवें फौज अपनी अपनी साफजितादो । सुनो० । ३ ।
और मेरी फौज लानाजाके मोह कोटसे ।
बचता है कौन मोहकी सैनाकी चोटसे ॥ सुनो० ४ ।

(७१)

तर्ज आला (इसको जोरकी और खड़ी आवाजमें पढना चाहिये)
राग द्वेष सैनापतीका फौज तय्यारकर मोहराजाके दरबार में लाना ।

—— ० ——

हम राग द्वेष सैनापती ।
और कर सैना सकल तय्यार ।
अजी लाए हैं हमतो मोह सरकारमें ।
और लीजे राजा जी आप निहार ।
पहला सरदार ज्ञानावरन निहारिये ।

और ताकी सैना देखो पांच परकार। १।
जिन जग जीव सारे घेरे भ्रम भावमें।
और देखो डोलें भवसागर मंझार। २।
होने उपयोग यह न देवे किसी जीवको।
ऐसी इनकी महिमा आप देखिये सरकार। ३।
दूजा दर्शनावर्ण खड़ा है अपने जोशमें।
और सारे जगमें किया है अंध्यार। ४।
नौ परकार सूरमा हैं देखो उसके साथमें।
क्या मजाल कोई देख सके एक बार। ५।
तीजा सरदार देखो वेदनी महा बली।
तापे सुख दुख दोऊ जोधा बल धार। ६।
कोई सुखी कोई दुखी वेदनीके भेदसे।
ऐसी माया देई है जगतमें पसार। ७।
चौथा आयू सरदार ऐसा बलवानहै।
सारे जीव सिद्ध बिन भये हैं लाचार। ८।
क्या मजाल आज्ञा बिन कोई उसके जा सके।
और इसके सूरमाहैं देखो यही चार। ९।
पांचवां है नाम करम सबसे सूरमा।
ताके बिन कौन करे ऐसा संसार। १०।
नाना रूप पुदगलके बनावे आपही।
जैसे घट मट कर डारे हैं कुम्हार। ११॥

तिनमें फिर चेतन करे है अपने बास को ।
जैसा तुम रात दिन देखो हो ब्योहार ॥ १२ ॥
इस संग सूरमा तिरानवें सदा रहें ।
और वह तो रूप धरें नाना परकार ॥ १३ ॥
छटा सरदार होशयार अपने काम में ।
ऊंच नीच गोत दो धरे हैं हथियार ॥ १४ ॥
सातवां है अन्तराय महा बलवंत जी ।
जिसके सुभट पांच अती बलकार ॥ १५ ॥
कोई बलवान जो चाहे रन करन को ।
हाथ नहीं लेने देवे कोई हथियार ॥ १६ ॥
एकसौबीस सारे सूरमा महाबली ।
और यह खड़े हैं इनके सातों सरदार ॥ १७ ॥
आठ बीस सूरमा तुमहारे निज फ़ौज के ।
सज धज आये हैं लड़ाई को विचार ॥ १८ ॥
एकसौ अड़तालीस जुड़े हैं सारे सूरमा ।
अजी यह तो जगमें मचादें धूवां धार ॥ १९ ॥
आप के हुकम के खड़े हैं सारे मुन्तज़िर ।
हुकम सुनादो न लगावो कुछ वार ॥ २० ॥

(७२)

तर्ज नाटक ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगा कर तू झटपट ॥
राजा मोह का फौज को हुकम देना और फौज का रवाना होना ॥

ओ सरदारो ओ दुखकारो चेतन से लड़ने जावो ॥ टेक ॥

मारो या मरो हारो या हरो ।
उलटे हटकर मत आवो ॥ ओ० १ ॥
जलदी धावो जलदी धावो ।
जलदी धाओ जाओ ॥ ओ० २ ॥
पीछे ना हटो काटो या कटो ।
बैरी से नहीं घबरावो ॥ ओ० ३ ॥

(७३)

तर्ज-अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥
मोह की फौज का चेतन के नगर को
घेर लेना और सुमन मुखबिर का चेतन
को खबर देना ॥

—— ० ——

सुनो राजा चेतन सुमन का कलाम ।
के बैरी ने घेरा है तेरा मुकाम ॥ १ ॥
राग और द्वेष अपनी सैना को ले ।
गिरफ़तार करने को आये तुझे ॥ २ ॥
है लशकर उधर मोह का गिर गया ।
इधर तेरा समकित नगर घिर गया ॥ ३ ॥
मिले सातों सरदार हैं संग में ।
है तय्यार सेना सभी संग में ॥ ४ ॥
है मुशकिल तो बचना इन्हों से मगर ।
सुमति ज्ञान से मशवरा जल्द कर ॥ ५ ॥

मेरा काम था जो वह मैं कर चुका ।
जो कहना था चेतन सो मैं कह चुका ॥ ६ ॥

(७४)

तर्ज इन्द्रसभा ॥ घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥
राजा चेतन का घबराना और सुमतज्ञान से कहना ॥

— ० —

ओ सुमन तूने यह क्या आके सुनाया मुझको ।
हाय किसमत मेरी क्या रंग दिखाया मुझको ॥ टेक ॥
मैं तो समझा था कि अब चैन से गुजरेगी मेरी ।
कुमती कम्बख्त ने फिर आके सताया मुझको ॥ १ ॥
ज्ञान मंत्री सुनो और सुन मेरी प्यारी सुमता ।
सुन लिया है जो सुमन ने है सुनाया मुझको ॥ २ ॥
मैंने पहले न कभी मोह से संग्राम किया ।
न किसी ने यह कभी हाल जताया मुझको ॥ ३ ॥
क्या करूं करना है क्या मुझको बतावो साहब ।
पहले तुमने भी न यह भेद बताया मुझको ॥ ४ ॥
किस तरह जीतूंगा इस मोह की सेना को मैं ।
नाम जबसे है सुना चैन न आया मुझको ॥ ५ ॥
कोई तदबीर करो धीर बंधावो मेरी ।
बेखबर मोह ने है आन दबाया मुझको ॥ ६ ॥
मोह के नाम से सुमता मेरा घबराता है जी ।
जून चौरासी में है इसने रुलाया मुझको ॥ ७ ॥

(७५)

तर्ज-चंबोला ॥ अल्लादियाकी चालमें ॥

सुमतिका चेतनको धीर बंधाना ॥

दोहा ॥

हे चेतन सुन कानदे, तुझे बताऊं बात ।
परमातमके ध्यानसे, होत करम का घात ॥ १ ॥
श्रीजिनवरका ध्यान धर, ले भगवतका नाम ।
निश्चेतेरी जीत हो, कर देखो संग्राम । २ ।
सब विकलप मिटजायगा, श्रीजिन नाम आधार ।
साख बताऊं मैं तुझे, जिन शासन अनुसार ॥ ३ ॥

चंबोला ॥

जिन शासन अनुसार देख मैं तुझको साख सुनाऊं ॥
जिस जिसने श्रीजिनको सुमरा उनकाहालबताऊं ।४।
सेठ सुदरशनको सूलीसे सिंघासन दीना भारा ।
पावकको करदिया नीर जब सियाने मंत्रउचारा ।५।
चीर बढ़ायाथा द्रोपदका सभा बीच जाने सारे ॥
मानतुंग जबक़ैद हुवा तब छोड़दिये सगरे तारे ।६।
रानी उरबलाकी पण राखी राजा बोध मती हारे ।
दिया धरम उपदेश अनन्ती भवसागर सेती तारे ।७।
श्रीपालको बीच समन्दरसे लाकर बाहर डारा ।

भशम व्याध सनमन्त हुई उसका भी तो संकटटारा । ८
शूकर सिंघ नवल वानर के जब समकित हिरदेआई ।
पशुगतको दिया तोड़ छोड़ जा गणधरकी पदवीपाई ९
नाग नागनी जलत उभारे सुर पदवी दोनो पाई ।
दिया जटायू मंत्र रामने जा उपजा सवर्गों मांहीं । १०
सती सुभद्रा सती अंजना इन सबके संकट टारे ॥
जिन जिनशरनलेई जिनवरकी सोहोगए भवदधीपारे११
नमोकार उरआन बान समकितका अपने करधारो ॥
जाय लड़ो रन बीच खींचसर मोहराय छिनमें मारो१२

(७६)

तर्ज इन्द्रसभा ॥ मामूरहूं सोखी से शरारतमे मरी हूं ॥
चेतनका फौज तय्यार करनेके लिये हुकम देना ॥

—— o ——

अय ज्ञान इधर आइये मेरा हुकम सुनो ॥
तामील हुकम हो जगदरीन हो सुनो ॥ टेक ॥
हो फौजकशी मोहपे बस आज एकदम ॥
और जाके अपनी सैनाको तय्यार तुम करो ॥ १
लो फौज मेरी और जो हैं साथमें मेरे ॥
उनसबको भी इस बातकी झटपट खबर करो ॥ २ ॥
तय्यार होके फौज मेरेसामने आवे ॥
रहने न पावे कोई इसे ध्यानमें धरो ॥ ३ ॥

(७७)

तर्ज–आला ॥

ज्ञानका फौज तय्यार करके लाना ॥

लाया मैं फौज संवारके ।
और जो जो हैं तुमरे हितकार ।
अजी यह तो सारेही आपके परतापसे ।
और राजा आये हैं होहोके तय्यार । १ ।
एकओर सम्वरकी सैना देखो सामने ।
खड़े हैं सत्तावन सूर मदधार ॥ २ ॥
दूजेओर निरजरा सेना अपने जोरमें ।
करलिया अरीके हरनका विचार ॥ ३ ॥
गुपत सुमत तीन पांच बारा भावना ।
और दस लक्षन धरम हितकार । ४ ।
बाईस प्रीसह अरु चारित्र मिलायके ।
अजी पूरे सतावन आए हैं सवार । ५ ।
तप और ध्यान देखो निरजरा फौजमें ।
और इनकी सेना इनके संगमें अपार । ६ ।
समभाव उपशम और धीरज संतोष सत्य ।
और राजादानशील तप भावचार । ७ ।
समवेग सामाइक पूजा जप साथमें ।
आए हैं लड़न लीये निज हथियार । ८ ।
मुखविर सुमन और दूत हैं विवेक जी ।

धीरज अखंडी मोरचोंका सरदार । ९

समकित खड़ा है निशान सबके बीचमें ।
और जिसपे जयजिनेन्द्र लिखा है संवार । १० ।

अठारा हजार देखो प्यादे आए शीलके ।
और जोधा आमिले हैं नानापरकार । ११ ।

सब मिल फौज हैं असंखजीव संगमें ।
अजी कौन करसके चेतन उसकी शुमार । १२ ।

(७८)

तर्ज नाटक—सुनये सुनये सरकार ।

चेतनका ज्ञानको लड़ाईका हुकम देना और ज्ञानका रवाना होना ॥

सुनये ज्ञान वज़ीर । मेरी सेनाके बीर ।
धरो मनमें यह धीर । जावो लड़नेको अब । टेक ।

जैसे सुमता बताया । तुझे हुकम सुनाया ।
मेरे मनमें यह आया । करो ऐसा ही ढब । १ ।

चारों सेना विख्यात । लेलो मेरी भी साथ ।
करो करमोंका घात । काम आवेंगी कब ॥ २ ॥

देखो ज्ञान होशयार । सेना रखना तय्यार ॥
कभी आना न हार । संग लेजावो सब ॥ ३ ॥

(७९)

तर्ज नाटक-फलकसे अपशाके आलप गजब टूटा गजब टूटा ॥

ज्ञानका मोहकी सेनापर विजयपाना ॥ और परपन आदि दसदेशोंका जीतना और चेतनको मुबारिकबाद सुनाना ॥

हुई है जीत चेतनकी मुबारिक हो मुबारिक हो ।

हार गई फौज करमोंकी मुबारिक हो मुबारिक हो। टेक
था पहला मोरचा मिथ्यात सासादनके मैदांमें।
मुकामें मिश्रको जीता मुबारिक हो मुबारिकहो ॥ १ ॥
खड़ा सम्यक्तने झंडा किया अविरत विरतपुरमें।
लिया परमत अपरमतको मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ २ ॥
अपूरबकर्ण जब पहोंचे घटा सब जोर दुशमनका।
करणअनिवृत किया वशमें मुबारिकहो मुबारिकहो। ३
सुक्षमसम्पराय जब जीता था आखिर मोरचा दसवां।
बजाया जीत नक्कारा मुबारिकहो मुबारिकहो। ४।
विवेक आया जो मैदांमें मोहके सूरमा सातों।
पड़े थर्राके धरनी में मुबारिकहो मुबारिकहो। ५ ॥
मोहकी फौज बेदिल हो उलट भागी छोड़ रनको।
मिली है जीत चेतनको मुबारिकहो मुबारिकहो।

(८०)

तर्ज नाटक ॥ गुलशनमें आई बहार ॥

सब दरबारवालोंका मिलकर मुबारिकबाद गाना ॥

आज राजा चेतन गुलशनमें आई बहार। टेक।
चेतनकी जीत भई सुमतासे मीत।
मोह राजाने पाई है हार। हार राजा चेतन०। १०॥
क्रोध और मान माया लोभको मारा।
कुमताको दीना निकार। निकार राजा चेतन०। २।
ज्ञान गुलाब चारित्र चंबेली।

मरवाहै मोह निवार । निवार राजा चेतन० । ३ ।
सम्यक्त क्यारीतप संजम संवारी ।
निज गुणका है गैंदा हज़ार । हज़ार राजा चेतन० । ४ ।
शीलका ताज राजा चेतनके सिरपे ॥
जामें मोती अठारा हज़ार । हज़ार राजा चेतन० । ५ ।
कुमता दुहाग दियो सुमता सुहाग ।
करे सुमताने सोलह सिंगार । सिंगार राजा चेतन० । ६ ।
ध्यान सिंहासनपे चेतन विराजे ।
हाज़िर है सारा दरबार । दरबार राजा चेतन० ॥ ७ ॥

इति न्यायमतसिंह रचित चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक का तीसरा ऐक्ट समाप्तम् ॥

न्यामत विलास अंक १२

चिदानन्दशिवसुन्दरी नाटक

चौथा ऐक्ट

राजा मोह की फौज का हारकर राजा मोह के
पास जाना और राजा मोह का अपनी
फौज को धीर बंधाना और दोबारा
लड़ाई के लिये हुक्म देना राजा
चेतन का मान करना और
सुमत का कहना न मानना
और राजा मोह से हार
कर क़ैद होना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः ।

(८१)

॥ तर्ज ॥ फलकसे अय शहेआलम गज़ब टूटा गज़ब टूटा ।
राग द्वेष मंत्रियोंका हारकर वापिस आना और
राजा मोहको खबर देना ॥

ग़ज़ब हारे ग़ज़ब हारे, ग़ज़ब हारे ग़ज़ब हारे ।
सुभट लाखों गए मारे, गए मारे गए मारे । टेक ।
लड़ीं जी तोड़कर फौजें मगर किसमतका क्या कीजे ।
शील तप भावना आदी मिले चेतनसे जा सारे । १ ।
बिबेक आया जूंही रनमें सुभट सातों हते छिनमें ।
पड़े हैं खाकमें सातों ससकते बानके मारे । २ ।
गिरा मिथ्यातका झंडा हमारा दिल हुवा ठंडा ।
गया दिल टूट सेनाका गये रन छोड़कर सारे । ३ ।
देश ग्याराथे क़बज़े में गऐ उनमें से दस हारे ।
रहा उपशांतपुर बाक़ी न उसकी भी आस प्यारे ॥ ४ ॥

(८२)

तर्ज ॥ घरसे यहां कौन खुदाके लिये लाया मुजको ॥
राजा मोहका अफसोस करना और राग द्वेषपे खफाहोना ॥

सख्त अफसोस यह क्या हाल सुनाया मुजको ।
हारके किसलिये मुंह तुमने दिखाया मुजको । टेक
तुमने ग़फ़लतसे मेरी सेनको बरबाद किया ।
मुल्क बरबाद किया ज़ेर बनाया मुजको ।

(८३)

तर्ज ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥
राग द्वेष मंत्रियोंका जवाब देना ॥

—— . ० ——

चिदानन्दरायको क़ाबूमें कोई ला नहीं सकते ।
सुमत और ज्ञान है जब लग करम वहां जा नहीं सकते । टेक
ज्ञानको देखते ही ढंग बिगड़ जाता है सेनाका ।
ग़ज़ब चारित्र का चक्कर जिसे ठैरा नहीं सकते । १ ।
छिमाने क्रोधको मारा बिनयसे मान भी हारा ।
सरल संतोष आगे लोभ माया जा नहीं सकते ॥ २ ॥
कोई तरकीब चालाकी करो चेतन पकड़नेकी ।
वगरना रनमें तो चेतनके सनमुख आ नहीं सकते । ३ ।
कभी भूलेसे बे समझे न तुम चेतनसे जा भिड़ना ।
अजब है माजरा राजा तुम्हें समझा नहीं सकते । ४ ।

(८४)

तर्ज ॥ अय मरदाने जंगी जवानों शेर सयानों आवो ॥
राजा मोहका तरकीब बताना । और राग द्वेष आदि सब
सेनाको लेकर उपशान्तनगरको आना ॥

—— .० ——

अय सरदारो धीरज धारो । शोक निवारो आवो । टेक ।
सबके सब आपसमें मिलकर छुपकर बेठो आन ।
लाखों अलछल छलबलकर उपशांत नगरको धावो । १ ।
जब चेतन वहां पर पग धारे रहना तुम होशयार ।

एक दम हल्ला करके गिरके पड़के आन दबावो । २ ।
पकड़ो जकड़ो चेतनको फिर लेके तीर कमान ।
मारो मारो होश बिगाड़ो किसीसे ना शरमावो । ३ ।

(८५)

तर्ज कव्वाली-कोई चातुर ऐसी सखी न मिली जोकि पीके दुवारे पहोंचादेती॥
राजा चेतनका उपशान्त नगरको जीतनेका विचार करना
और ज्ञानसे कहना ॥

सुनों ज्ञान अब तो करमोंकी हार भई ।
हर बातमें है मेरी जीत भई ।
मेरे मनमें है लूं उपशांत नगर ।
बिन जीते जियाको सबरही नहीं । १ ।
राजपाटकी पीछेसे रखना खबर ।
होशयारीसे सब इन्तज़ाम करो ।
मैं अकेलाही जाताहूं लड़नेको वहां ।
रहा मुझको किसीका भी डरही नहीं । २ ।

(८६)

तर्ज कवाली—कोई चातुर० ॥ ज्ञान मंत्रीका जवाब ॥

——,०.——

राजा ऐसा न मनमें विचार करो ।
राजा मोहसे हरदम डरते रहो ।
उसनें हरिहर ब्रह्मा सभीको छला ।
उसकी अल छलकी तुमको खबरही नहीं ।

उपसांत नगर मोह राजा वसे ।
उस देशमें मोहका ज़ोर घना ।
कहीं धोकेमें मारेगा राजा तुझे ।
मत समझो कि कोई खतरही नहीं ॥ २ ॥

(८७)

तर्ज कवाली ॥ कोई चातुर० ॥ राजा चेतन का जवाब

——::o ——

मैने कुमता को देखो दुहाग दिया ।
और काम को सख्त जवाब दिया ।
सारे मोह के दलको खराब किया ।
अब मोह का मुझको तो डर ही नहीं । १ ।
ऐसी हारी सी बातैं तू करता है क्यों ।
किस बात में मैं कमज़ोर बता ।
मेरी शक्ती अनन्त मैं हूं बलवन्त ।
इस शक्ती की तुझको खबरही नहीं २ ॥

(८८)

तर्ज कवाली ॥ कोई चातुर० सुमतका जवाब ॥

——.o:——

कहा चेतन तू सक्तीका मान करे ।
अरे मानका करना भलाहै नहीं ।
अरे मान किया गढ़लंकपती ।
भई कैसी गती क्या खबरही नहीं । १

अरे चक्री सभूमनेमान किया ।
सो वह सागर बीचमें जाके मरा ।
मत मान करो जिया मानो कहा ।
मान करनेका अच्छा समरही नहीं । २ ।

(८९)

तर्ज कवाली ॥ कोई चातुर० ॥ राजा चेतन का जवाब ॥

प्यारी सुमता कहां तेरी सुमती गई ।
जो तैं ऐसी कायरताकीं बात कही ।
सच है नारीकी बात न सुनना कभी ।
इनको अच्छे बुरेकी खबरही नहीं । १ ।
मोह रंक मेरा कर सक्ता है क्या ।
वाके सातों सुभट रन बीच हते ।
मैं ना मानूगा प्यारी तु लाख कहो ।
तेरी बातोंका होता असरही नहीं । २ ।

(९०)

तर्ज कवाली ॥ कोई चातुर० । सुमता का जवाब ॥

पहले माना न था तूने मेरा कहा ॥
बिषय कूपमें जाकरके क़ैद हुवा ।
सहे लाखों बरस दुख तूने जीया ।
कैसे भूला कहो क्या खबरही नहीं । १ ।

अब भी मानो न मानो यह मरज़ी तेरी।
परयाद रखो जिया मेरी कही।
पछतावेगा सीस धुनेगा तूही।
जो तू कहने पे करता नज़र ही नहीं ॥ २ ॥

(९१)

तर्ज़ कवाली ॥ कोई चातुर० । चेतनका जवाब ॥

—— o ——

अच्छा यह तो बता मुझमें क्या है कमी।
किस बातका डर है कहो तो सही।
और बातें तो लाखों सुनातेहो तुम।
जो है मतलबकी उसका ज़िकर ही नहीं। १।
कोई भेद है तो मोसे साफ़कहो।
कील क़ाल नहीं मुझसे ज्यादे करो।
मैने लड़नेका अबतो इरादा किया।
उससे हरगिज़ करूं दर गुज़र ही नहीं। २ ॥

(९२)

तर्ज़ कवाली—कोई चातुर० ॥ सुमत का जवाब ॥

—— o ——

यह जो उपशमश्रैनीका रथ है जिया।
क्या खबर मजधार में जाय पड़े।
मोह नाग अगर टुक जाग पड़े।
तेरे सरकी क़सम तेरा सरही नहीं। १।

प्यारे क्षायकशरैनीका रथ है अटल।
लावो करके जतन वामें बैठो संभल।
फिर जावो जहां तेरा चाहे जिया।
मोह राजाका कोई खतर ही नहीं ॥ २ ॥

(९३)

तर्ज कवाली ॥ कोई चातुर० ॥
चेतनका जवाव देना और उपशान्त नगरको
जीतनेकेलिये रवानाहोना।

—— ० ——

अरी मरनेकी धमकी दिखाती किसे।
मुझे मरनेका खोफो खतरही नहीं।
अबिनाशी हूं मैं मेरा मरता है क्या।
इस बातकी तुझको खबरही नहीं। १।
रथ क्षायकशरैनी तय्यार नहीं।
रथ उपशम शरैनीका काफी यही।
मैं हूं जाऊं अभी चाहे सास रहे।
ना रहे मुझे इसका फ़िकरही नहीं। २।

(९४)

तर्ज नाटक—मानो मानो पिया मोरा यह कहा॥
सुपतका चेतनके दामनको पकड़ना और चेतनको
मने करना॥

मानो मानो जिया मोरा यह कहा।
कलपा, ना जिया।

जाने नाहीं नगरी बैरन वह है सारी तेरी दुशमन।
प्यारे हटकी बातें हटकी बातें नाहीं जेना।
मानो मानो जिया मोरा यह कहा। १।
हितजानके तोहे दूं हूं मैं तो बता।
मैं बता मैं बता मैं बता मैं बता।
प्यारे जान प्यारे जान कहना मान कहना मान अय अंजान
क्या नादान कहना मान।
प्यारे ज्ञानी है हैरानी-परेशानी-सरगरदानी-हो अभिमानी
तू लासानी-यह नादानी क्या।
मानो मानो जिया मोरा यह कहा। २।

(९५)

तर्ज गजल ॥ कतल मतकरना मुझे तेगो तबरसे देखना

चेतनका दामन छुड़ाना और सुमति और ज्ञानको जवाब देना

—— ०.——

कहना और सुनना तेरा सुमता मुझे भाता नहीं।
अबतो लड़नेके सिवा चारा नजर आता नहीं। टेक।
सुन चुका सब कुछ तेरा अब मत मुझे हैरान कर।
घरमें मुझसे बैठकर अबतो रहा जाता नहीं। १।
यहतो औरत है मगर अय ज्ञान क्यों डरता है तू।
किस लिये रोके है तुझको यह समझ आता नहीं। २।

है नगर उपशान्त खाली कहिये अब खतरा है क्या ।
इससे अच्छा जीतका मोक़ा नजर आता नहीं ॥ ३ ॥
हैं सुभट सातों मोहके कामरनमें आ चुके ।
हो कोई मेरे मुक़ाबिल अब नज़र आता नहीं ॥ ४ ॥

(९६)

तर्ज ठुमरी ॥ रावनने शक्ती मारी हरके तान तान तान ॥

सुमत व ज्ञान दोनोंका चेतनको समझाना ॥

———o———

मत जावो राजा चेतन कहना मान मान मान ॥ टेक ॥
है मोह महा बलधारी । यह मानो कही हमारी ।
वह करे तुम्हारी ख्वारी । छिन में आन आन आन । १ ।
जो सात सुभट थे हारे । मत जानों गएहैं मारे ।
वह जिन्दा हो गए सारे । आगई जान जान जान । २ ।
जो तू है रनका सूरा । है मोह भी बलमें पूरा ।
मत जानो उसे अधूरा । करके मान मान मान । ३ ।
रथ उपशम शरेनी छारो । पग क्षायक शरेनी धारो ।
फिर मोह बलीको मारो । धनुको तान तान तान । ४ ।
नहीं मानो कहा हमारा । होगा बदहाल तुम्हारा ।
तू सुनले चेतन प्यारा । देकर कान कान कान । ५ ।

(१७)

तर्ज नाटक--तुम कौन तुम कौन तुम कौन हो साहिब आए कहां से किससे है पहिचान ॥

चेतन का नाराज होकर जवाब देना और उपशान्त नगर को रवाना होना ॥

—— o: ——

बसथाम, बसथाम, बस थामलो साहिब अपनी जुबां को मत कीजे हैरान । बस थाम० ॥ १ ॥

यह खटपट, यह खटपट, यह खटपट, कैसी लाई है तुमने कर दिया है परेशान बस थाम० ॥ टेक २ ॥

रहने दो साहिब बस अब तुम अपनी इस तदबीर को ।
कहिये न कहिये अब तो हम देखेंगे निज तकदीर को ।
हां हां मैं शौकत वाला । ओ हो मैं हिम्मत वाला ।
तुमहो कम हिम्मत वाले । जाऊं मैं लेने को मोह स्थान ओ नादान । बस थाम० ॥ ३ ॥

(१८)

तर्ज नाटक ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगा कर तू झटपट ॥

राजा चेतन का उपशान्त नगर में पहोंचना और मोह का घात से निकलना और मोह की सेना का आना मोह का सेना को चेतन के पकड़ने का हुकम देना ॥

—— o ——

आवो आवो पकड़ो पकड़ो चेतन को जलदी झट पट ।

देखो देखो भाग न जावे हाथ न आवेगा नट खट ॥ १ ॥
कान मरोड़ो आंखें फोड़ो तोड़ो हाथ पाओं चट चट ।
अट्टे गट्टे चोटी पट्टे काट धरो सारे कट कट ॥ २ ॥
देखो आयू नरक जेल के दारोगा सुनलो झट पट ।
यह चेतन मुलज़िम है भारी नहा सुनना इसकी गट पट ॥३॥
मिथ्या स्थान नरक में डारो नीचा सर लटके लट पट ।
ऊपर से फिर मुगदर मारो सिरके बीच खटा खट खट ॥ ४ ॥
सत्तर कोड़ा कोड़ी सागर क़ैद करो इसकी चट पट ।
एक घड़ी भी चैन न पावे रात दिना राखो खट पट ॥५॥
भूक लगे तो इसके तनको काट खिला देना डट डट ।
प्यास लगे तो सीसा गाल पिला देना इसको गट गट ॥ ६ ॥
सख्त सज़ा देने में इसको और करो लाखों अट बट ।
कोई कसर रहे नहीं बाकी चाह मिलावो सो सट पट ॥७॥

(९९)

तर्ज नाटक ॥ मैं चंचल आफत हूं कितना बड़ा दाना बड़ा सयाना ॥
नरक आयूनामा दारोगा जेल का चेतन को पकड़ कर मिथ्यात
गुनस्थान नरक में लेजाना और राजा मोह से कहना ॥

——,o.——

मैं बढ़कर आफत हूं कितना, बड़ा ऐंड़ा बड़ा बैंड़ा ।
मैं जितना आंका बांका हूं, उतनाही नट खट मरदाना ।
बड़ा जंगी हूं दिल संगी हूं, वाह वाह मैं हरफन रंगी हूं ।
मैं जाऊं इसे ले जाऊ बड़ा धमकाऊं उलट लटकाऊं मैं ।

तड़ तड़ पड़ पड़ कड़ कड़ धड़ धड़ ।
ऐसा मारूं होश बिगारूं वाह वाह वाह ॥ मैं बद़कर० ॥

(१००)

तर्ज गजल—कतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥
नरकआयू दारोगा जेल का चेतन को नर्क में कैद करना ॥
और चेतन का अफसोस करना ॥ और सबको नसीहत करना ॥

हाय क्या एक दम से सब उलटा जमाना होगया ।
मेरा ज़िद कर घरसे आने का बहाना होगया ॥ टेक ॥
ज्ञान सुमता ने मुझे समझाया मैं माना नहीं ।
मान में आकर के मेरा दिल दिवाना होगया ॥ १ ॥
चैन से गुज़रे थी और मुलकों में मेरा राज था ।
आज से नरकों में हा मेरा ठिकाना होगया ॥ २ ॥
मैं न समझा था कि यूं आफत में मैं फंस जाऊंगा ।
हा मुझे बरसों का यह दुखड़ा उठाना होगया ॥ ३ ॥
कौन अब जा करके मेरी ज्ञान सुमता से कहे ।
मेरी नज़रों में बिगाना सब ज़माना होगया ॥ ४ ॥
अय दिला संतोष कर रोने से क्या है फ़ायदा ।
कर्म की तहरीर का ज़ाहिर में आना होगया ॥ ५ ॥
सीख सुमता से न हूं बाहिर अगर अबके बचूं ।
ठोकरें खाकरके मैं अब तो सियाना होगया ।
आगई सम्यक्त मेरे दिल में निश्चे होगया ।

जैन बानी का कहा दिल में निशाना होगया ॥ ७ ॥
सुमत का मानो कहा अय साहिबों नहीं ग़ोर कर ।
देखलो कैसा मेरा ग़मका फ़िसाना होगया ॥ ८ ॥

इति न्यायमतसिंह रचित चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक का चौथा ऐक्ट समाप्तम् ॥

न्यामत विलास अंक १२

चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक

पांचवां ऐक्ट

शिवसुन्दरी को चेतन का हाल मालूम होना और अफ़सोस करना और सुमता सखी को याद करना, सुमता सखी का आना और चेतन का सब हाल बताना और शिव-सुन्दरी को तसल्ली देना सुमता का राजा मोह से चेतन को छुड़ाना और राजा चेतन की शिवसुन्दरी से शादी होना और सबका मुबारिकबादी गाना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः ।

(१०१)

तर्ज--बिन्दी लेंदे लेंदे लेंदे मेरे माथे का सिंगार ॥

कालभद्री देवी का शिवसुन्दरी को चेतन की खबर देना ॥

— o —

प्यारी सुनिये सुनिये सुनिये तेरे चेतन का विचार ॥ टेक ॥ वह गया नगर उपशान्त अकेला लेकर हथियार । उसे मोह राजा ने पकड़ा जकड़ा करके मायाचार । प्यारी० ॥ १ ॥

है नर्कायू दुखकारी भारी पापी बदकार । लेगया जीवको क़ैद किया है नरकों के मंझार । प्यारी० ॥ २ ॥

हैं दुःख दीने चेतन को उसने नाना परकार । वह हाहाकार करे है वाका कोई नहीं यार । प्यारी० ॥ ३ ॥

कुछ करो जतन प्यारी चेतन का दयाको विचार । नहीं तेरे सिवा चेतन का प्यारी कोई हितकार । प्यारी० ॥ ४ ॥

(१०२)

तर्ज--कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

चेतन का हाल सुनकर शिवसुन्दरी का अफसोस करना और सुमति सखी को याद करना ॥

कहां जाऊं किधर ढूंढूं न सूरत देख पड़ती है । बिना चेतन मेरे चितको न एक छिन चैन पड़ती है । टेक ।

अनादी काल से चेतन के गुण मैं सुनती आती हूं । हुआ आसक्त मेरा मन बिरह में जां तड़पती है ।

स्वयम् सिध है जगत खट दर्व जिनमें सार चेतन है। वही मन मोहनी मूरत कहीं नहीं देख पड़ती है ॥ २ ॥

वह अवनाशी अमूरत और तीनों लोकका राजा। विना उसके मेरे जीमें कहूं क्या क्या गुज़रती है ॥ ३ ॥

काल लभदीने जो आकर सुनाई है खबर मुझको। मेरे दिल बेकली है कल नहीं एक पलभी पड़ती है ॥ ४ ॥

सखी सुमता तू कर आकर सहाई मेरी विपतामें। सखी वह है विपतमें जो सखीके आन पड़ती है ॥ ५ ॥

धरूं सर अपना परमातम तुम्हारेसार चरणोंमें। तुम्हारे नामसे स्वामी सभी विगड़ी संवरती है ॥ ६ ॥

जगत रंजन निरंजन तू है भंजन सारे दुक्खोंका। हरो संकट गिले चेतन शिवा अरदास करती है ॥ ७ ॥

(१०३)

तर्ज ॥ घरसे यहां कौन खुदाकेलिये लाया मुजको ॥

सुमति सखीका आना और शिवसुन्दरीका हाल पूछना ॥

———.'o:———

हे सखी किस लिये तूने है बुलाया मुजको। आज क्या बात है जो याद कराया मुझको। टेक। डरसे कुमताके मैं एक वनमें पड़ी सोती थी। आपकी यादने सोतीको जगाया मुजको। १ ॥

रंग मूंहका तेरे पलटा हुवा आताहै नज़र। हाल बिगड़ा हुवा क्यों आज दिखाया मुझको ॥ २ ॥

जिस किसीने है तुझे आके सताया प्यारी । उसने तुजको नहीं बलकि है सताया मुजको ॥ ३ ॥

सच बता भेद जिता बात सुनादे मनकी । जिस लिये तूने यहां आज बुलाया मुजको ॥ ४ ॥

(१०४)

तर्ज ॥ मामूर हू शोखीसे शरारतसे भरी हूं ॥

शिवसुन्दरीका सुमतको हाल सुनाना ॥

—— ० ——

बेकल हूं कल नहीं बिरह सागरमें पड़ी हूं । सुमता न पूछों हाल मेरा दुखमें भरी हूं । टेक । जिस दिनसे चिदानन्दके गुण मैंने सुने हैं । चेतनने मैं चकोर चन्द बनकें हरी हूं । १।

चेतनको मोहरायने फंदेमें फंसाया । मैं क्या करूं चेतन से बड़ी दूर पड़ी हूं ॥ २ ॥

सुमता तू चिदानन्दको करमोंसे छुड़ादे । बेकल है कल से जी मेरा कर जोड़ खड़ी हूं । ३ ।

(१०५)

तर्ज ॥ तोरी छलबल है न्यारी तोरी छलबल है प्यारी करो बातें न मोसे सांवरया जान ॥

सुमतका शिवसुन्दरीको चेतनका हाल बताना ॥

—— ० ——

शिव सुन्दर पियारी सुन बातें हमारी तुझे सारा सुनाऊं चेतनका हाल । कुमाति बनायो जाल चेतनपे दियो डाल

विषयोंमें चेतन फंसायो कर चाल। अरी करमोंके जाल फंसा ऐसा बेढाल हुया हाल बेहाल। हाय हाहाहा हाहाहा हाहाहा। शिव०। १।

छोड़ आयो निगोद। किया फूलोंका पोद। वड़ पीपल बनायो बनायो अनार। काहूने बनायो हार। काहूने उतारो डार। व्यंजन बनाऐ बनाये अचार। अजी फल फूल पात। किया अगनीमें घात। हुवा दाल और भात। हाय हाहाहा हाहाहा हाहाहा शिव० ॥ २॥

जल मिट्टीकोधार। नून कंकर पहाड़। सज्जी शोरा कहायो कहायो तुशार। करी वहु हाहाकार। काहू ना सुनी पुकार। भीतोंसे मारा देकर पछाड़। कहीं पैंचों में भींच कहीं नेचों में खींच। कहीं कींच ऊंच नीच। हाय हाहाहा हाहाहा हाहाहा। शिव०। ३॥

वायू अगनी में जीव। दुख पावे सदीव। रेल अंजनमें आकर मरे हैं अपार। पशू परजाय सार। गाय बैल तन धार। बिच्छू भगेरा बन फिरते हैं ख्वार। अजी कान खजूर। गज बंदर लंगूर। स्वान माखी मयूर। हाय हाहाहा हाहाहा हाहाहा। शिव०। ४।

कहीं मानुप कहायो। ममता में फंसायो। कहीं सिरपे उठाये सखेड़ हजार। चन्द्र सूरजके विमान। सारे तारे लिये छान। आवा गमनके चक्करमें आन। नहीं नरकों में

चैन। नही स्वर्गों में चैन। सुनो सुन्दर यह बैन। हाय हाहा हा हाहाहा हाहाहा। शिव०। ५।

(१०६)

तर्ज॥ यादकरलेना हकीकत धर्म पे कुरवां हुवा।
शिवसुन्दरीका चिदानन्दका हालसुनकर अफसोस करना
और सुमतसे चेतनको छुड़ानें के लिये अर्दाश करना॥

—.०—

हाय चेतनको फंसाया किसतरह करमोंके वीच।
है कुमति बैरन मोह वैरीमहा दुनिया के वीच॥ टेक॥
अवतो मुशकिल होगया चेतनसे हा मिलना मेरा।
मोहका जादू है मुशकिल तोड़ना दुनियाके वीच। १।
सतचिदानन्द परम आनन्द रूप है चेतन सुजान।
दुखसागरमें पड़ा वह किस तरह दुनियाके वीच। २।
ज्ञान दरशन गुण हो जिन के और शक्तीवान हो।
किस तरह वह जाल कुमतामें फंसा दुनियाके वीच। ३॥
क्या करूं किस ढंग से चेतनको मैं लाऊं यहां।
मैं सुकृत हूं बंदमें जाना न हो दुनियाके वीच। ४।
हे सुमति तेरे सिवा कोई नज़र आता नहीं।
मेरे चेतनको छुड़ादे कर्मसे दुनियाके वीच। ५॥
वीनती सुनयो मेरी चेतनको यहां लावो ज़रा।
तू महा उपकारनी दुख हारनी दुनिया के वीच। ६॥

(१०७)

तर्ज–कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां मे इसकी मुशकिल है ॥

सुमतिका शिवसुन्दरीको जबाव देना ॥

— o —

कुमति चक्करमे बच आना नहीं आसान मुशकिल है ।
मोहके जालमें चेतन छुड़ाना उसका मुशकिल है ॥ टेक ॥
नगर मिथ्यातपुर जगमें बनाया मोह राजाने ।
काम अंधेर अगम रसता सो पाना उसका मुशकिल है । १ ।
क्रोध मद लोभ मायाका कोट चारों तरफ भारी ।
लगा परमादका पहरा हटाना उसका मुशकिल है । २ ।
नगरमें जाल करमोंका बिछाया है जतन करके ।
फंसे जो जालमें जाकर फिर आना उसका मुशकिल है । ३ ।
कुमतिकी सेजपर चेतन पड़ा है मोह निद्रामें ।
अरी इस नींदमे प्यारी जगाना उसका मुशकिल है । ४ ।
सुरासुर सब हरी हरचंद सूरज मोह वशकीने ।
श्री अरिहन्त बिन काबूमें लाना उसका मुशकिल है ॥ ५ ॥

(१०८)

तर्ज ॥ कहां लेजाऊं दिल दोनों जहांमें इसकी मुशकिल है ॥

शिवसुन्दरीका सुमतिको जबाब देना ॥

— o —

नहीं आसान जो होवे कहो वह कौन मुशकिल है ।
करे इनकार औरोंका उसे फिर कौन मुशकिल है । टेक ।

अनन्ती जीव तूने मोक्षमें पहोंचादिये प्यारी।
तेरे नजदीक चेतनको लेआना कौन मुशकिल है।१॥
सुमत रानी जगत रानी महा रानी बखानी है।
तेरी तदवीरके आगे वता तो कौन मुशकिल है।२॥
देख यह तत्व सुद्री मेरी उंगरीकी जरा लेजा।
सभी आसान हो मुशकिल तुझे फिर कौन मुशकिल है।३॥
जहां तू हो कुमतिका वहां नहीं नामोनिशा होता।
तेरा मिलना ही मुशकिल है वगरना कौन मुशकिल है।४।
जगतके ताज श्रीजिनराज तेरी पक्षमें प्यारी।
प्रभू जिसके सहाई हों उसे फिर कौन मुशकिल है।५।

(१०९)

तर्ज नाटक॥ काहे कलपावे जलावे रानी जान तोरे जाएं हम मव वारनां सुमतिका शिवसुन्दरीको तसल्ली देना और चेतनके छुड़ानेके लियेजाना॥

—०—

काहे कलपावे जलावे प्यारीमान मोरी जाऊं मैं बलिहारी।टेक।
बेकल है क्यों एसी कल कल न कर प्यारी निश्चे है चेतन की आवन की आस। कुछ दिनमें तू अपने चेतनको देखेगी मतकर तू जीको उदास। काहे०।१।
नरकोंमें शामत है आफत मुसीबत है तो भी मैं हिम्मत न हार। एक छिनमें नरकनके दुरजनको हनहनके चेतन को लाऊं निकार। काहे०।२॥

अब आहोज़ारी न कर मोरी प्यारी तू सम्यक्त मनमें विचार । समझ अपने दिलमें मिले आज कलमें वह चेतन चिदानन्द सार । कहे० ॥ ३ ॥

(११०)

तर्ज—ओ लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥
सुमति का मिथ्यात नगर को चेतन की तलाश में जाना और परमादचन्द दरवान का सुमत को पकड़ना ॥

—— ० ——

अरी ओ सुमत सुन तू मेरा कलाम ।
यहां किस लिये आई क्या तेरा काम ॥ १ ॥
यह मिथ्या नगर मोह सरताज है ।
कुमत का यहां चारों तरफ राज है ॥ २ ॥
मैं दरवान परमाद है मेरा नाम ।
हरूं सबका पुर्षार्थ है मेरा काम ॥ ३ ॥
बड़े ज्ञानी ध्यानी हैं दुनिया के बीच ।
पड़े हैं सभी मेरे फंदे के बीच ॥ ४ ॥
अरी ओ सुमत तेरी क्या है असल ।
मैं रिशियों को एक पलमें करदूं सिथल ॥ ५ ॥
कुमति ने हुक्म यह सुनाया मुझे ।
के आने न दूं मैं यहां पर तुझे ॥ ६ ॥
है बेहतर कि यहां से चली जा अभी ।

इधर भूलकर भी न आना कभी ॥ ७ ॥
नहीं अबही रग रग हिला दूंगा मैं ।
सुमति तेरी सारी भुला दूंगा मैं ॥ ८ ॥

(१११)

तर्ज ॥ धर्म कभी नहीं हारूं मोरे पंडिता ॥
सुमति का परमादचन्द से कहना और अपने भाई
उद्यमसिंह को याद करना ॥

अरे सुवे छोड़ो मोरी बय्यांरे सुरकियां ॥ टेक ॥
तु दुराचारी दुखकारि अघभारी ।
संगत तेरी जीव पड़त नरकियां ॥ अरे० ॥ १ ॥
मैं सुमता सुख कारण हित कारण ।
मोहे नींद से खुला देती अंखियां ॥ अरे० ॥ २ ॥
उद्यमसिंह सुनियो जो कहीं होवे ।
करियो सहाई पापी आलश अटकयां ॥ अरे० ॥ ३ ॥

(११२)

तर्ज ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगा कर तू झटपट ॥
उद्यमसिंह का आना परमादचन्द को धमकाना और भगाना और मिथ्यात
नगर के दरवाजे को तोड़ना और दरवाजे के कोट का उड़ जाना ॥

ओ परमादी ओ बरबादी सुमता को छोड़ो झट पट ॥ टेक ॥

उद्यमसिंह है नाम हमारा । जानत है हमको जग सारा ।
क्या तू नहीं जाने नट खट ॥ ओ० ॥ १ ॥
बाल मरोडूं सिरको फोडूं । पट्टे अट्टे गट्टे तोडूं । भूल जाय
सारी अट वट ॥ ओ० ॥ २ ॥
ठैर ठैर क्यों भागा जावे । क्यों नहीं अपना बल दिखलावे
सुमता से करता खट पट ॥ ओ० ॥ ३ ॥
उद्यम मुगदर हाथ हमारे । तोड़ धरूं आलश पट सारे । घट
पट खुल जावें चट पट ॥ ओ० ॥ ४ ॥

(११३)

तर्ज—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

मिथ्यात नगर में मिथ्यात रूप अंधेरा दिखाई देना । सुमति का सोचना सुमत का तत्वमुद्री का दिखाना । मिथ्यात अंधेरे का उड़ जाना चेतन का मोह नींद में कुमत के साथ सोते हुए नजर आना और सुमति का विचार करना ॥

विपत ने आन मैं घेरी फंसी आफत में जां मेरी ।
समझ में कुछ नहीं आता यहां अब क्या बनाऊं मैं ॥टेक॥
अजब मिथ्यात अंधेरा नगर मिथ्यात में छाया ।
गजब है हाथ अपना भी नहीं जो देख पाऊं मैं ॥ १ ॥
मुझे यह तत्व की मुद्री देईथी मेरी सुन्दर ने ।
करेगी क्या मदद मेरी इसे तो आजमाऊं मैं ॥ २ ॥
अगर यह तत्व सच्चे हैं श्री जिनराज भाषे हैं ।
हटे मिथ्यात अंधेरा अंगूठी को दिखाऊं मैं ॥ ३ ॥

बिषय की सेजपर चेतन कुमत के संग सोता है।
पड़ा है मोह निद्रा में कहो क्योंकर जगाऊं मैं ॥ ४ ॥

(११४)

तर्ज ढोला ठुमरी ॥ आज तो जगाई वैरी नींद में ॥
सुमति का चेतन को जगाना ॥

अजी चातुर चेतन चेत चितारो मोह नींद में ॥ टेक ॥
तूने दरशनज्ञान अजी चेतन। सारा तो गंवायो मोहे नींदमें १
तुझे काल अनादिरे बीतो। अजहूं पड़े हो मोहे नींद में ॥ २
तुझे अपना परायोरे चेतन। नजर न आयो मोहे नींद में ॥३
तत्व सुद्री निहारो चेतन। आंख तो उघाड़ो मोहे नींद में ॥४

(११५)

तर्ज—कोठा मेरा क्या हुवा छूटा किधर मकान ॥
चेतन का मोह नींद से उठना और घबराकर कहना ॥

मिथ्या नगर कहां गया छूटा किधर मकान।
सोता था मैं किस जगह आया हाय कहां ॥ १ ॥
ना आलश पर्माद है और ना वह तिमर रहा।
ख्वाब मैं हूं यह देखता जाग रहा हूं या ॥ २ ॥

(११६)

तर्ज ॥ घरसे यहां कौन खुदाके लिये लाया मुझको ॥
चेतन का विचार करना ॥

— ० —

मोह की नींद से है किसने जगाया मुजको।

सेज विषयोंसे अहो किसने उठाया मुजको ॥ टेक ॥
मैं तो मिथ्यात अंधेरेमें पड़ा सोताथा ।
किसने यह आज स्वपरकाश दिखाया मुजको । १ ।
यह अंगूठी मेरी अंगुरीमें कहांसे आई ।
नज़र अब आने लगा अपना पराया मुजको । २ ।
तत्व छै एक नगीनेपे लिखे हैं किसने ।
माजरा क्या है नहीं भेद है पाया मुजको । ३ ।

(११७)

तर्ज ॥ ज़माना रंजका कहते हैं पासदार नहीं ॥
सुमतिका चेतनको जवाब देना ॥

इधरको देख अजब गुल खिला ज़मानेमें ।
यह जादू मैंने किया है तेरे जगानेमें । टेक ।
हटाया मैंने ही परमाद कोटको तोड़ा ।
बहुत सा खेद उठाया यहांके आनेमें । १ ।
अंगूठी हाथमें तेरे लगाई है मैंने ।
मिथ्यात जाल उड़ाया है आज़माने में । २ ।
कुमतिको सोनेदो चुरकेसे दूरहो जावो ।
नहीं है फ़ायदा समझो कुमति उठाने में । ३ ॥

(११८)

तर्ज ॥ नहो वहीं में अगर हमानी चले न चक्कर की कामगानी ॥
॥ चेतन और सुमतका आपसमें सवाल व जवाब ॥

चे० सुनो पियारी अरज हमारी है नाम क्या और कहां से आई

वतावो है यह अंगूठी किसकी कहां से पाई यहां कैसे लाई ॥१
सु० सुमति हमारा है नाम चेतन अकली मैं शिव नगर
से आई ॥
अंगूठी शिवसुन्दरी ने दी है सो मैं लेआई तुझे दिखाई २
चे० है कैसी शिवसुन्दरी कहां है सरूप कैसा है रूप कैसा
नगीना अंगुशत्री मै कैसा लिखा हुआ है वता यह कैसा३
सु० सरूप आनन्द जान उसका जगतके ऊपर मकान उसका
नगीना उसका इसीपे सारा लिखा हुवा है निशान उसका ४
चे० समझ में आता नहीं हमारे नगीने पर यह निशान क्या है
कीया है दिलमें निशान मेरे वता तो इसका वयान क्या है ५
सु० किसी को इसकी पहिचान क्या है जिनवानी जाने
निशान क्या है ॥
वहीं वतावेगी भेद सारा के इस निशां का वयान क्या है ॥ ६

(११९)

तर्ज ॥ ओबे जोहर गोहर हमपर पत्थर होंकर बरस नहीं ॥
चेतनका सुमतिसे जिनवाणी के पास लेजानेके लिये
अरदास करना ।

—०:—

सुमति पियारी राज दुलारी मनको मेरे चैन नहीं ।
जिनवाणी पे लेचल मुजको भेद खुले विन चैन नहीं ॥ १
शिवसुन्दर मेरे मन वसियां विन शिवसुन्दर चैन नहीं ।
हाथ जोड़ सिर चरणन नाऊं एक छिन एक पल चैन नहीं ॥२

(१२०)

तर्ज नाटक--मुबारिकबादी गावोशादी शहजादी की ॥

सुमति का जवाब देना और चेतन और सुमति का जिनबानी के पास जाना ॥

——:o:——

टुक सुमती धारो कुमति निवारो सुन चेतन प्यारे । अब जल्दी यहां से चलिये । वह जिनवरबानी सब सुखदानी भेद खुलें सारे । जीव मुकत का सम्बर बन्द का आश्रम निर्जर पुदगल का । भिन भिन भिन भिन वरणन होगा । सुनियो धरियो करियो निश्चे मन प्यारे ॥

(१२१)

तर्ज ॥ बूटी खाने का कैसा बहाना हुवा ॥

सुमति और चेतन का जिनबानी के पास जाना और तत्वों का हाल पूछना ॥

——:o:——

सातों तत्वों का हाल सुनावो हमें सातों तत्वों का ॥ टेक ॥
फंस के मोह जाल । दुखपायो कमाल । कहा जावे न हाल । शिव मारग में जलदी लगावो हमें । सातों० ॥ १ ॥
जिनबानी तू सार । तू है सबकी हितकार । मोहे जालनिवार शिवसुन्दर से प्यारी मिलावो हमें । सातों० ॥ २ ॥
करूं करमोंका नाश । होवे ज्ञान प्रकाश । मिले मुक्तीका वास कोई तदवीर ऐसी बतावो हमें । सातों० ॥ ३ ॥

(१२२)

तर्ज—दोहा चम्बोला अठादिया की चाल में ॥
जिनवानी का तत्वों का हाल सुनाना ॥

— ० —

दोहा ॥

चिदानन्द चेतन तू तीन भवन सरताज ।
कुलटा कुमत आशक्त हो खोदिया राज समाज ॥ १ ॥
राग द्वेष मनमें करा जाय पड़ा दुख कूप ।
बंधा मोह के जाल में भूला आप सरूप ॥ २ ॥

चंबोला ॥

भूला आपसरूप रूप तेरा मैं तुझको बतलाऊं ।
तत्वरूप तुझको दिखलाऊं मनका भरम मिटाऊं ॥ ३ ॥
सात तत्व दुनिया के बीच में सोहें सार सातों सारे ।
वही लिखे हैं इस मुद्री में सो तू अब सुनले प्यारे ॥ ४ ॥
सच्चे हैं यह तत्व अनादि नहीं अन्त इनका होता ।
भाषे हैं भगवान श्री अरिहन्त ने है जैसा देखा ॥ ५ ॥
सम्यक दरशन ज्ञान चरण जो इन सातों को करते हैं ।
करम जाल को तोड़ वही फिर भवसागर से तिरते हैं ॥ ६
पहला तत्व है जीव अमूरत अबिनाशी चेतन ज्ञानी ।
करता हरता करम आपने दृष्टा आनन्दमय प्रानी ॥ ७ ॥
तत्व दूसरा जान नाम उसका अजीव बतलाते हैं ।
पुदगल धरम अधरम काल आकाश भेद कहलाते हैं ॥ ८

पुद्गल मूरतवान अरु बाकी चार अमूरत हैं जानों।
सूक्षम और स्थूल भेद कर छै परकार पुद्गल मानों॥९
इसही में हैं कर्म कर्मके सूक्षम रूप बताए हैं।
और एकसो चालीस आठ करमोंके भेद जिताए हैं॥१०
करमोंका चेतनकी तरफ आना आश्रव कहलाता है।
है यह तीसरा तत्व बतावन भेद रूप कहलाता है॥११
चौथा तत्व है बन्द करमका जीव संगमें बंधजाना।
तत्व पांचवां सम्वर है कर्मोंका आतेरुकजाना॥१२
भेद सतावन हैं सम्वरके सुनो श्रीजिनराज कही।
छिद्र आश्रव रोकन कारन यह सारा सन डाटमयी॥१३
छटा तत्व निरजरा बन्द कर्मोंको अलग कराता है।
जैसे मैल हो दूर सो वह दो भेद निरजरा पाता है॥१४
आते करमको रोकदिया और बंधकरम जबदूरकिये।
हुई मोक्षआतमकी आतमसे परमातम रूप भये॥१५
यह शिवसुन्दरतत्व सातवां चेतनको है सुखदानी।
परम अनूपम ज्ञान सरूपम सेवें सबज्ञानी ध्यानी॥१६
ऐसा जान उरआन भान कर्मोंको जीतराजासोई।
जाय वरो शिवनार फेर नहीं है रोकनहारा कोई॥१७

(१२३)

तर्ज॥ है मोरक अधिक तरूप हमका दिया न जाता मोह॥

चेतनका जिनवानीसे मदाक करना॥

इस जगमें मेरे लाखों अरी नजरोंमें गुजरते हैं॥ टेक॥

करते हैं सौ जतन काम दो चार संवरते हैं।
सुन नाम कामका लाखों काम बन बनके विगड़ते हैं। १
मोह महा बलवान ज्ञान सब जनका हरते हैं।
क्रोध मान मद लोभ मेरे दामनको पकड़ते हैं। २।
करे सहाई कोई नहीं नज़रोंमें वह पड़ते हैं।
कहो जतन क्या करूं करम टारे नहीं टरते हैं। ३।

(१२४)

तर्ज ॥ क़तल मत करना मुझे तेगो तवरसे देखना ॥
जिनवानीका चेतनको समझाना।

—.०.—

मत डरे चेतन जग हथियार हिम्मत हाथले।
जा अभी सम्यक्तपुर सुमताको अपने साथ ले ॥ टेक ॥
तख्त समकितका विछाहै उसपे जा इजलासकर।
ज्ञानको मंत्री बना और मान उसकी वात ले। १
मंत्रयह नोकार ले हर वक्त इसका ध्यानकर।
नाम श्रीअरिहन्तका आठों पहर दिनरात ले। २।
रथ छायकश्रैनीका ले तुझको वता देती हूं मैं।
उसपे चढ़ संग्राम कर करमोंको जाकर घात ले। ३।
दसनगर एक दम सेजा तुझको फतह होजाऐंगे।
रोक नहीं सकता कोई समकित धनुषको हाथले। ४।
जब नगर उपशान्त पहोंचे ध्यान करलेना ज़रूर।
मोहको हत फांदजाना सैन अपनी साथ ले। ५।

बारहवीं मंजिलमें केवल ज्ञान होवेगा तुझे।
तेरहवें तिहूं लोकका एक छिन में राज और पाटले। ६।
चौथवीं मंजिलमें बाकी चार करमोंको हनो।
आ मिले शिवनार बरमालाको अपने हाथ ले। ७।

(१२५)

तर्ज नाटक ॥ जावो जी जावो बड़े दानके दिखाने वाले।
चेतन और सुमतिका सम्यक्तपुरको जाना और रास्ते में मिथ्यात नामा अंधेरे जंगलका आना और दोनोंका परमात्माकी अस्तुती करना ॥

तू है परमातम सच्चे ज्ञानका बताने वाला। धर्म सुनाने वाला। रस्ते लगाने वाला। भर्म मिटाने वाला। चारों गती के तुही दुखोंसे बचाने वाला। टेक।

नीराकुल निरद्वंद निराधार देखा। चेतन चिद्रूप चिदानन्द निराकार देखा। समकित नगरी दरसावो। भूलोंको राह बतावो। बैरीका नाश करावो। तू सुखकारी-तू दुखहारी-तू हितकारी-पर उपकारी-शिव सम्पत दरसाने वाला। तू है०।

(१२६)

तर्ज ॥ अय सनम तू जरा। मुझे देतो बता। कहां जाके छुपा। नहीं आता नजर।
तत्वार्थसूत्रदेवताका आना और तत्वश्रधान सूरजको दिखाकर मिथ्यात अंधेरको हटाना। और चेतन और सुमतिको सम्यक्तपुरका रस्ता बताना।

— ० —

अय चेतन मतहरो। ध्यान इधरको करो।

धीर मनमें धरो । नहीं कोई खतर । १ ।
रवी तत्व प्रकाश । करे मिथ्याका नाश ।
देखो है मेरेपास । जरा करके नजर । २ ।
मै हूं तत्वार्थ देव । करें सबमेरी सेव ।
करूं मिथ्याका छेव । चले आवो इधर । ३ ।
छेहों मतके मंझार । एक जिनमत है सार ।
उसे लो मनमें धार । मिले शिवकी डगर । ४ ।

(१२७)

तर्ज नाटक ॥ शाहोंके शाह आये । राजाजी शाहआए । कामिलहोमाह आए परयों तय्यार हो ॥

चेतन और सुमतका सम्यक्तपुरमेंपहोचना और ज्ञान मंत्रीका मिलना और सम्यक्तके आठ अंग निशंकित आदि रूप आठों परियोंका मुबारिकबाद गाना ॥

चेतन सरकार आऐ । मुक्ती भरतार आए ।
सुमताको लार लाए । परियों तय्यार हो ॥ १ ॥
मिथ्यात तोड़ आए । कुमतीको छोड़ आए ।
और मुहको मोड़ आए । सारे होशियार हो । २ ।
ज्ञान वजीर है । सुमता सुशीर है ।
वीरों में वीर है । जलदी दरबार हो । ३ ।
सम्यक्त ताज है । चेतनको राज है ।
शुभ दिन यह आज है । घर घर पुकार हो । ४ ।

(१२८)

तर्ज ॥ पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

चेतनका ज्ञानको सेना तय्यार करनेके लिये हुकम देना ॥

—— ० ——

अय ज्ञान मेरे जीको अब सम्यक्त आगई ।
आनन्दकी घटा मेरे चहुंओर छागई । टेक ।
पहले तो जो हुवा सो हुवा माफ कीजिये ।
दिलपरथी मेरे मोह की गफ़लतसी छागई । १ ।
अब ज्ञान सुमति दोनोंका मैं तावेदार रहूं ।
बाहर न हूंगा कहने से अब अकल आगई । २ ।
अहसां तुम्हारा मुझसे अदा हो नहीं सकता ।
तुम सच्चे हितू मेरे यह दिलमें समागई । ३ ।
शिवसुन्दरीका नाम जबसे मैंने सुना है ।
नफरत हमारे दिलमें है दुनियासे आगई । ४ ।
हो जिस तरह जल्दीसे शिवसुन्दरसे मिलावो ।
सूरत शिवासुन्दरकी मेरे मनको भागई । ५ ।
जल्दीसे ज्ञान जा मेरी सेनाको लाइये ।
है काल लब्धी भी मेरे नजदीक आगई । ६ ।
छायकश्रेनी रथ मेरा तय्यार कीजिये ।
करमोंका करूं नाश यही दिलमें आगई । ७ ।

(१२९)

तर्ज ॥ घरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुजको ॥

॥ ज्ञान मंत्री का जवाब देना और सैना तय्यार करने के लिये जाना ॥

——..0:'——

हुक्म राजा का सर आंखों से बजा लाता हूं ।
सेन तय्यार है सब जाके सजा लाता हूं ॥ १ ॥

(१३०)

तर्ज ॥ फलक से अय शहे आलम गजब टूटा गजब टूटा ॥

ज्ञान का सेना तय्यार करके महाराजा चेतन के सामने आना ॥

——.:0:.——

महाराजा खड़ी है सेन आकरके देखलीजे ।
सभी सामान है तय्यार लड़ने का समझलीजे ॥ १ ॥
हुकम के मुन्तज़िर सारे खड़े हैं आपके आगे ।
करो मत ढील महाराजा लड़ाई का हुकम दीजे ॥ २ ॥

(१३१)

तर्ज ॥ बहादुर जंगी सारे नंगी म्यान करो शमशीर ॥

राजा चेतन का लड़ाई का हुकम देना और रवाना होना ॥

बहादुर जंगी सारे नंगी हाथ गहो शमशीर ।
चलो नाश करने करमों का धरकर दिलमें धीर ॥ १ ॥
कतलआम करदो सारों का क्या कायर क्या वीर ।
पूरा जंग मिचे करमों से भारी आलम गीर ॥ २ ॥
ज्ञान सुमति तुम चलो संग में रहना मेरे तीर ।
अबके नाश मोह का करना है कामिल तदबीर ॥ ३ ॥

बरछी भाला खंजर विछवा ढाल कमानो तीर।
अर्जुन से तुम निर्भय होकर डारो अरि दल चीर ॥ ४ ॥
मिथ्या मिश्र अपरमत परमत अव्रत व्रत जागीर।
सूक्षम उपशम क्षीन नगर जीतो दिल्ली कशमीर ॥ ५ ॥
चौदा नगर जीत लो सारे करूं बहुत तौकीर।
करम लेख पर मेख मारदो क्या क़िसमत तक़दीर ॥ ६ ॥
हैं कायर जो करता के हो रहे लकीर फक़ीर।
करता हरता मैं करमों का कर देखो तक़रीर ॥ ७ ॥
ना कोई धरम राज है समझो मुनकिर और नकीर।
जड़ है करम हतो जल्दी कर पुरषारथ तदबीर ॥ ८ ॥

(१३२)

तर्ज—सुनके पीवी बातें पंरी कान लगाकर व झटपट ॥
राजा चेतन का सेना सहित आना और मिथ्यात आदि दस नगरों को
जीतना और ग्यारहवें मुकाम उपशान्त मोह पर आना और
ज्ञान का चेतन से कहना ॥

—:o:—

देखो राजा देखो राजा होश संभालो तुम झटपट ॥ टेक ॥
धोके का मोका यह आया। जिसमें पहले धोका खाया।
अब यहां से दोड़ो झटपट ॥ १ ॥
जो इसमें तुम पांव धराया। तो फिर सीधा नरक दिखाया।
फिर वहां होवेगी लटपट ॥ २ ॥

यहां से कूद फांद कर जावो। सीधे नगर बारहवें आवो।
मारो मोह राय नटखट ॥ ३ ॥

(१३३)

तर्ज ॥ लेता जाइयोरे सांवरया बीड़ी पान पान की ॥
राजा चेतन का ज्ञान का धनवाद गाना और मोह को मारना ॥
और उपशांत नगर को फांदकर आगे जाना ॥

तूने खूब दिलाई याद मुजको आन आनके।
आन आनके प्यारे जान जानके ॥ तूने० ॥ टेक ॥
मारुं मोह महा दुखकारी।
नित नित गाऊं गुन ज्ञान ज्ञान के ॥ तुने० ॥ १ ॥
मारा मोहनाग सोते को।
ध्यान धनुषकर तान तान के ॥ तूने० ॥ २ ॥
कूद क्षीनमोहे नगरी चलिये।
आनन्द छायो उरआन आन के ॥ तूने० ॥ ३ ॥

(१३४)

तर्ज ॥ महबूब यारजानी । पजाबी चाल ॥
महाराजा चेतन का ज्ञान और सुमति सहित क्षीन मोह बारहवें
नगर में पहोंचना। और सुमति सुन्दरी, दया
सुन्दरी शानती, जिनवानी देवियों का
गुणानुवाद गाना ॥

—— ० ——

महावीर चेतन अब हम, महावीर चेतन अब हम। तेरे गुण

गावें छम छम । अमृत रसबरसे झमझम । जश चमके चम
चम । महावीर० । टेक ।
तेराध्यान धरें नित हम हम । जिन धर्म सेवें जमजम ।
मिथ्यातहोवे कमकम । सम्यक्त होहमदम । महावीर० ।१।
बाजे सितारठुमठुम । पायल बजावें छमछम ।
आवें गत भरती ठुमठुम । उड़जावें सब एकदम । महावीर०।२।
जयकार सुनावें दमदम । होदूर सुनकर यमयम ।
दुनियाका मोहतमतम । मेटो पद सेवें हम ॥ महावीर० ।३।

(१२५)

तर्ज ॥ रघुवर कौशल्याके लाल मुनीकी यज्ञ रचाने वाले ॥

सौधर्म इन्द्रमहाराजका आना और चिदानन्दरायका गुणानुवाद गाना और धर्म उपदेशके लिये प्रार्थना करना ॥

——.,o——
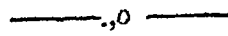
चेतन शिव सुन्दर भरतार शिवनगरीको जाने वाले ॥
नगरी को जाने वाले मोहका नाश कराने वाले । चेतन० ।टेक।
आए उपशम नगरी बीच । मारे वैरी करमन नीच ॥
अपने धनुष ध्यानको खींच ॥ मोहका सीस उड़ाने वाले । १
पहोंचे क्षीन मोहमें आय । धनपत समोशरण दरसाय ।
सुर नर सब तुमरे गुण गाय । केवल ज्ञान उपाने वाले । २ ।
जीवाजीव तत्व हैं सार । झलकें दर्पण ज्ञान मंझार ॥

हमको दो उपदेश अवार । शिव मारग दरसाने वाले । ३ ।
जगमें हैं पाखंड अनेक । सच्चा है जिनमतही एक ।
भागें स्याद्वादको देख । सब पाखंड रचाने वाले । ४ ।

(१३६)

तर्ज ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

महाराजा चेतनका धर्म उपदेश देना ॥ और सजोग नगरको रवाना होना ॥

—.o—

सुनो दुनियाके रहने वालो शिवमारग बताते हैं ।
पड़े क्यों दुखमें सुख होनेका हम रसता बताते हैं । टेक ॥
बहुत पाखंड देखो आज कल दुनियामें फैले हैं ।
कहीं धोका न खाना रासता सीधा दिखाते हैं ॥ १ ॥
यक़ीं सादिक़ इलम सादिक़ अमल सादिक़ तीन मिलकर ।
बनी सीधी सड़क शिवकी तुम्हें नकशा दिखाते हैं । २ ।
करो सादिक़ यक़ीं तत्वोंका गर मुक्तीमें जाना है ।
सात हैं तत्व जो तत्वार्थशासन बीच आते हैं । ३ ।
सिवा इनके नहीं हैं तत्व गर मानो तो झूटे हैं ।
न्याय परमाणसे तहक़ीक़ करलो हम जिताते हैं । ४ ।
कोई मरनेमें शिव माने कोई हिंसामें शिव माने ।
जो ऐसा मानते हैं वह कभी नहीं चैन पाते हैं । ५ ।

करमके नाश करनेसे आतमा होवे परमातम ॥
यकीं गर हो नहीं देखो नज़ीर अपनी दिखाते हैं ॥ ६ ॥
निजात हो जाती है जिनकी वह फिर दुनियामें नहीं आते ।
वह मूरख हैं जो कहते हैं मुकतसे लोट आते हैं । ७ ।
समझलो कर्म करता और हरता है यही चेतन ।
जो करता दूसरा मानें कभी नहीं मोक्ष पाते हैं ॥ ८ ॥
करमको काटना चाहो तो जिनमत की शरण लीजे ।
बिना जिनमतके और सब पक्षकी बातें बनाते हैं । ९ ।
सुमति और ज्ञानके कहनेमें अय साहिब सदा रहना ।
वगरने दुख उठावोगे तजर्बे की बताते हैं ॥ १० ॥

(१३७)

तर्ज ॥ हुवा छत्र राम जसरथके बहादुर होतो ऐसा हो ॥

चेतनका संजोग नगरमें पहोंचना और बाकी करमोंका नाश करना और दयासुन्दरी आदी देवियोंका चेतनके गुणानुवाद गाना ॥

— ० —

हुई है जीत चेतनकी बहादुर हो तो ऐसा हो ।
किया है नाश करमोंका दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ टेक ॥
मिसर मिथ्यात सासादन लिये तीनों मुकाम आकर ।
किया पाखंडका खंडन बहादुर हो तो ऐसा हो । १ ।

जुंही अब्रत नगर पहोंचे तानकर बान समकित का।
सुभट सातोंको मारा है बहादुर होतो ऐसा हो। २।
विरत परमत अपरमतको करण दोनोंको जा जीता।
हता छतीस करमोंको दिलावर होतो ऐसा हो। ३।
चले आगे फ़ौज लेकर जमाया मोरचा भारी।
मोह उपशांत पुरमारा बहादुर होतो ऐसा हो। ४।
क्षीन मोह का जो गढ़ आया ध्यानका सर तान करके।
तरेशठ सूरमा मारे बहादुर होतो ऐसा हो। ५।
मोह सबसे बली जिसने छले हरिहर सभी सुर नर।
उसे एक छिनमें दे मारा बहादुर होतो ऐसा हो। ६।
क्रोध मद लोभ माया काज जो चेतनके वैरी थे।
जलाए ध्यान अगनी में बहादुर होतो ऐसाहो। ७।
अरी बाक़ी जो थे सारे वह जा संयोगपुर मारे।
करम चकदम हते सारे दिलावर होतो ऐसा हो। ८।
बने आतमसे परमातम ज्ञान सूरज हुवा रोशन।
लखा लोकालोक सारा बहादुर होतो ऐसा हो। ९।
जो चेतनको कहें अलपज्ञ मूरख हैं वह नादां हैं।
दिखा दिया बनके खुद सरबज्ञ बहादुर होतो ऐसाहो। १०।

(१३८)

तर्ज ॥ ओ लालदेव इस तरफ जल्द आ
सुमतिका शिवसुन्दरी को खबर देना

शिवासुन्दरी तुजको परनाम है ॥

जगत शीश पर तेरा सुख धाम है ॥ १ ॥
सदाज्ञान आनन्द में वासकर ।
कि आते हैं चेतन करम नाशकर ॥ २ ॥

(१३९)

तर्ज ॥ राजा जोबन बरमन लागे ॥

शिवसुन्दरीका वरमाला लेकर चेतनके पास आना और चेतनके गलेमें वरमाला डालना और गाना ॥

——— ०, ———

राजा चेतन शुभ दिन जागे ॥
राजा झम झम झम झम चमके ज्ञान ताज ॥ चेतन शुभ दिन जागे राजा चेतन शुभदिन जागे । टेक ।
चेतन सीसपर घूमघूम दम दमकनचमकनलक झलकत कभूम सुर नर इन्दर, सब आवें झुक झुक, हरी हर हुए बड़ार चनगहा सारे स्वर्गलोकतक, ज्ञान ज्ञान का डंका । फिर फिर फूलमाल गल बीच डाल शिवनार आप भरतार । राजा चेतन० । १ ।

——— ॥ ———

(१४०)

तर्ज ॥ मुबारिक वादी गावो शादी शहजादीकी ॥
शिवसुन्दरीसे चेतनकी शादी होना और सबका मिलकर मुबारिक बादी गाना ॥

मुबारिकबादी चेतनकी । मुबा० टेक ।
शिवसुन्दर रानीकी हैं । क्या प्यारी प्यारी आनन्द कारी सुन्दर चेतन की । मुबारिकबादी० ।
बाग जियामें सुमत लतामें फूल खिला है केवल ज्ञान ।
तन मन बन बन चेतन फूला । कलियां खिलियां हंसियां खुशयां सखियां हरियां भरियां शादियां रचियां । सुन्दर चेतन की मुबारिकबादी० । १ ।

इति न्यायमतसिंह रचित चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक का पांचवां ऐक्ट समाप्तम् ॥

इतिश्री चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक समाप्तम् ॥

शुभम् ॥